Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ

(सूरतुल बक़रा आयत :268)

अनुवाद: और अल्लाह के मार्ग में खर्च करते समय उस में इस प्रकार की नापाक चीज़ का इरादा न किया करो कि तुम उसे हरगिज़ स्वीकार करने वाले न हो सिवाए इस के कि तुम अपमान के विचार से उस से मुंह मोड़ लो। और जान लो कि अल्लाह बे नयाज़ तथा बहुत प्रशंसा योग्य है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 38

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

9 मुहर्रम 1439 हिजरी कमरी 20 तबूक 1397 हिजरी शमसी 20 सितम्बर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

इस दुआ में यह भविष्यवाणी निहित है कि मुसलमानों में से कुछ ऐसे होंगे जो अपनी सच्चाई और पवित्रता के उपलक्ष्य पहले नबियों के उत्तराधिकारी हो जाएंगे और नुबुव्वत और पैग़म्बरियत की अनुकम्पाएं प्राप्त करेंगे और उनमें से कुछ ऐसे होंगे कि वे विशेषताओं में यहूदियों के समान हो जाएंगे और कुछ ऐसे होंगे कि वह ईसाइयत के रंग में रंगीन हो जाएंगे। क्योंकि ख़ुदा की वाणी में निरन्तर चलने वाला यह नियम है, जब एक क़ौम को किसी एक कार्य से रोका जाता है तो निसंदेह उन में से कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अंतर्यामी ख़ुदा के ज्ञान में उस कार्य को करने वाले होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो पुण्य और सौभाग्य से हिस्सा लेते हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सूरह फ़ातिह: मात्र शिक्षा ही नहीं अपितु उसमें एक बड़ी भविष्यवाणी भी निहित है और वह यह है कि ख़ुदा ने अपनी चारों विशेषताओं पालन-पोषण करने, कर्मों के प्रतिफल देने, कर्मों के बिना देने, प्रतिफल और दण्ड विधान का उल्लेख करके अपनी सामान्य शक्ति को प्रकट करके उसके बाद वाली आयतों में यह दुआ सिखाई है कि हे ख़ुदा तू ऐसा कर कि हम अपने पूर्व सच्चे नबियों, पैग़म्बरों के उत्तराधिकारी ठहराए जाएं, उनका मार्ग हम पर खोला जाए, उन पर होने वाली अनुकम्पाएं हमें प्रदान की जाएं। हे ख़ुदा हमें उन लोगों में सम्मिलित होने से बचा जिन पर इसी संसार में तेरा प्रकोप आया अर्थात यहूदी जाति जो हज़रत ईसा मसीह के काल में थी जिसका विनाश प्लेग द्वारा हुआ, और हमें इससे सुरक्षित रख कि हम उस क़ौम में से हो जाएं जिनके साथ तेरा पथ-प्रदर्शन नहीं हुआ और वह पथभ्रष्ट हो गई अर्थात ईसाई। इस दुआ में यह भविष्यवाणी निहित है कि मुसलमानों में से कुछ ऐसे होंगे जो अपनी सच्चाई और पवित्रता के उपलक्ष्य पहले नबियों के उत्तराधिकारी हो जाएंगे और नुबुव्वत और पैग़म्बरियत की अनुकम्पाएं प्राप्त करेंगे और उनमें से कुछ ऐसे होंगे कि वे विशेषताओं में यहूदियों के समान हो जाएंगे जिन पर इस संसार में ही प्रकोप आएगा, और कुछ ऐसे होंगे कि वह ईसाइयत के रंग में रंगीन हो जाएंगे। क्योंकि ख़ुदा की वाणी में निरन्तर चलने वाला यह नियम है, जब एक क़ौम को किसी एक कार्य से रोका जाता है तो निसंदेह उन में से कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अंतर्यामी ख़ुदा के ज्ञान में उस कार्य को करने वाले होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो पुण्य और सौभाग्य से हिस्सा लेते हैं। संसार के प्रारंभ से अंत तक ख़ुदा ने जितनी भी पुस्तकें भेजीं उन समस्त पुस्तकों में परमेश्वर का यह पुराना नियम है कि जब वह एक प्रजाति के लिए किसी कार्य को निषेध कर देता है या एक कार्य की प्रेरणा देता है तो उसके ज्ञान में यह निहित होता है कि कुछ उस कार्य को करेंगे और कुछ नहीं करेंगे। अत: यह सूरह भविष्यवाणी कर रही है कि कोई व्यक्ति इस उम्मत में से पूर्ण रूप से नबियों के प्रारूप में प्रकट होगा ताकि वह भविष्यवाणी जो आयत-صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ सिरातल्लज़ीना अनअमता अलयहिम (अलफ़ातिह:) से उद्धरित होती है पूर्ण रूप से पूरी हो जाए और उनमें से कोई समूह यहूदियों के रंग में प्रकट होगा जिन को हज़रत ईसा ने अभिशप्त किया था तथा ख़ुदा के प्रकोप भाजन बने थे, ताकि वह भविष्वाणी, जिसकी आयत ग़ैरिलमग़दूबे अलयहिम''غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ से पुष्टि होती है ज़ाहिर हो, और कोई समूह उन में से ईसाइयों के रंग में रंगीन होकर ईसाई बन जाएगा, जो अपने मदिरापान, अवैध को वैध करने और दुष्कर्मों के उपलक्ष्य ख़ुदा के पथ-प्रदर्शन से वंचित हो गए, ताकि वह भविष्यवाणी जो आयत ''वलज्ज़ाल्लीन'' وَلَا الضَّآلِّيْنَ से प्रकट हो रही है प्रकाश में आ जाए। चूंकि इस बात पर मुसलमानों की आस्था है कि आख़िरी ज़माने में सहस्त्रों मुसलमान कहलाने वाले यहूदियों की भांति हो जाएंगे। क़ुर्आन में अनेकों स्थान पर यह भविष्यवाणी विद्यमान है और सैकड़ों मुसलमानों का ईसाई हो जाना या ईसाइयों की भांति बे लगाम और वे रोकटोक जीवन व्यतीत करना स्वयं दृष्टिगोचर हो रहा है। बल्कि बहुत से मुसलमान कहलाने वाले लोग ऐसे हैं कि वे ईसाइयों के रहन-सहन के तरीके पसंद करते हैं और मुसलमान कहलाकर नमाज़-रोज़ा और वैध और अवैध के आदेशों को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते हैं। ये यहूदी और ईसाई विशेषताओं वाले दोनों समूह इस देश में फैले हुए दिखाई देते हैं। सूरह फ़ातिह: की ये भविष्यवाणियां तो तुम पूर्ण होती देख चुके हो और स्वयं अपनी आंखों से देख चुके हो कि कितने मुसलमान, विशेषताओं में यहूदियों के समान और कितने ईसाइयों के लिबास में हैं ।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 45 से 47)

☆ ☆ ☆

124 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 28, 29, 30 दिसम्बर 2018 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 122 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 28, 29 और 30 दिसम्बर 2018 ई.(शुक्रवार, शनिवार व रविवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-10)

☆ इस्तिग़फार का अर्थ क्षमा मांगना है इस्तिग़फार केवल गुनाह के लिए नहीं पढ़ते। बल्कि गुनाह से बचने के लिए भी पढ़ते हैं। नबी भी अपनी क़ौम के लिए इस्तिग़फार पढ़ते हैं और शैतान के हमलों से बचने के लिए भी इस्तिग़फार पढ़ा जाता है। इस्तिग़फार पढ़ने से अल्लाह तआला संभावित गुनाहों से बचाता है। इस्तिग़फार गुनाहों से बचने के लिए ही करते हैं।

ख़ातम की जो परिभाषा हम करते हैं वही उचित है ईसाइयत को फैलने में तीन सदियां लगी और अंत में एक रोमन बादशाह के स्वीकार करने पर इसको तरक्की मिली जमअत अहमदिया के बारे में हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ने लिखा है कि 3 शताब्दी भी पूरी नहीं होंगी कि अहमदियत विजय पा जाएगी। हम धीरे-धीरे फैल रहे हैं मौलवियों को ठीक करने के लिए भी तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पधारे हैं ताकि उनकी गलत धारणाओं का रद्द हो सके तभी तो आपका नाम हकम तथा इंसाफ करने वाला रखा गया है ताकि आप इन बिगड़े हुए मौलवियों को ठीक कर सकें।

वाकफीन नौ तथा वाक्फाते नौ बच्चों एवं बच्चियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ कक्षा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

12 मई 2016 ई (दिनांक जुमेरात)(शेष.....)

परिवार की मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े छ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ लाए और पारिवारिक मुलाकातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

आज शाम के इस सत्र में 16 परिवारों के 46 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात की सआदत पाई। हर परिवार ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का शरफ भी पाया। हुज़ूर अनवर ने करूणा करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम दिए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए। मुलाकात करने वाले यह परिवार स्वीडन की निम्नलिखित जमाअतों से लम्बे सफर करके आई थीं कालमार से आने वाले परिवार 285 किमी, यान शापिंग से आने वाले 292 कलोमीटर और स्टाक होम से आने वाले परिवार 612 किलोमीटर का सफर कर के पहुंचे थे इस के अतिरिक्त, नॉर्वे से आने वाले कुछ लोगों ने भी मुलाकात की। यह 600 कि.मी की दूरी तय कर के आए थे।

फिनलैंण्ड से आने वाले लोग 1090 किलोमीटर का सफर तय कर के आए थे। यहाँ से आने वालों ने भी अपने प्यारे आका से शरफ मुलाकात पाया। मुलाकातों का यह कार्यक्रम आठ बजे तक जारी रहा।

वाकफीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ कक्षा

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मरदाना हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार वाकफीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ क्लास शुरू हुई।

कार्यक्रम का आरम्भ तिलावत कुरआन से हुआ जो प्रिय आग़ा बलाल खान ने की उस का अर्दू अनुवाद प्रिय हमज़ा हयात और स्वीडश अनुवाद प्रिय ओसामा सलीम ने पेश किया। इस के बाद शाज़ेब अहमद चौधरी ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस अरबी भाषा में पढ़ी और उस का उर्दू अनुवाद प्रिय जाज़िब अहमद चौधरी ने किया।

हज़रत अबु हुरैरा से मरवी है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जब आदमी रात को सो जाता है तो शैतान उस की गर्दन पर तीन गांठे लगाता है और प्रत्येक गांठ लगाते हुए कहता है कि अभी रात बहुत है इसलिए सोते रहो। फिर अगर वह जाग गया तथा अल्लाह का ज़िक्र किया तो एक गाँठ खुल जाती हे और अगर वुज़ू करता है तो दूसरी गांठ भी खुल जाती है। और अगर नमाज़ पढ़ता है तो तीसरी गांठ भी खुल जाती है। और नेक और चुस्त हो जाता है वरना बुरा और सुस्त रहता है।

(सहीह बुख़ारी)

इस हदीस का स्वीडश भाषा में अनुवाद प्रिय अब्दुल मालिक चौधरी ने पेश किया। इस के बाद प्रिय महदी अहमद ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नज़्म पेश की।

लोगो सुनो कि ज़िन्दा ख़ुदा वह ख़ुदा नहीं।
जिस में हमेशा आदत कुदरत नुमा नहीं।

अच्छी आवाज़ में पेश किया। इस के बाद अज़ीज़ नजीब राशिद साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नीचे लिखा उद्धरण पेश किया।

"नबियों की दुनिया में आने की सब से बढ़ा उद्देश्य उन की शिक्षा तथा तब्लीग़ का लक्ष्य होता है। कि लोग ख़ुदा तआला को पहचानें और इस जीवन से जो उन्हें जहन्नुम तथा हलाकत की तरफ ले जाती है जिस को गुनाहों से मिली ज़िन्दगी कहते हैं मुक्ति मिले। वास्तव में यही बड़ा भारी उद्देश्य उन के सामने होता है। अत: इस समय भी जो अल्लाह तआला ने एक सिलिसला स्थापित किया है और उस ने मुझे भेजा है। तो मेरे आने का भी वही उद्देश्य है जो सब नबियों का था। अर्थात मैं बताना चाहता हूं कि ख़ुदा क्या है बल्कि दिखाना चाहता हूं और गुनाह से बचने की राह की तरफ मार्ग दर्शन करना चाहता हूं।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 8.9)

इस उद्धरण का अनुवाद नईम अहमद साहिब ने पेश किया।

इस के बाद नईम अहम चौधरी साहिब ने स्वीडश भाषा में धर्म के इतिहास के बारे में नीचे लिखी तकरीर की।

स्वीडन में वाइकिन का युग 800 ई से 1000 ई तक रहा है। ये लोग विभिन्न ख़ुदाओं की पूजा करते थे। इस्लाम का आरम्भ 632 ई में हुआ। जब इस्लाम बहुत तेज़ी से फैल रहा था। लेकिन इस का असर यूरोप पर अभी नहीं पड़ा था। ईसाइयत अपने ज़ोर पर थी परन्तु आरम्भ में ईसाइयत का ज़ोर स्वीडन पर नहीं था और वाइकन की तरफ से मुकाबला रहा। परन्तु यह विरोध अधिक दिनों तक नहीं हुआ। और कुछ समय के बाद यहां ईसाइयत फैलने तथा फूलने लगी। और 1008 ई में स्वीडन के बादशाह ने भी ईसाइयत को ग्रहण कर लिया और ईसाइयत नियिमत रूप से यहां का राज धर्म बन गई। और कानून बना कर प्रत्येक नागरिक के लिए ईसाइयत को स्वीकार करना आवश्यक हो गया वाइकिन ज़ोर के साथ ईसाइयत को स्वीकार करना नहीं चाहते थे परन्तु यह मुकाबला अधिक दिनों तक नहीं चला। और पूरे यूरोप का तरह यहां भी ईसाइयत को स्वीकार करना पड़ा। यह दौर स्वीडन की तारीख़ में बहुत महत्तव का समय था। क्योंकि इस तरह से हुकूमत तथा ईसाइयत एक हो गई। यह ज़माना लम्बा होता गया तथा ईसाइयत मज़बूत होती गई।1500ई में एक इस तरह का इन्कलाब यूरोप

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

बदर के सहाबा हज़रत आमिर बिन रबिया, हजरत हराम बिन मिलहान, हज़रत सअद बिन ख़ौला, हज़रत अबुल हसीम रिज़वानुल्लाह अलैहिम का ज़िक्र ख़ैर।

आज भी दुश्मन के हाथ को रोकने के लिए दुआओं के द्वारा ही अल्लाह ताला की मदद मांगने की आवश्यकता है।

अल्लाह तआला ही है जो इन लोगों की पकड़ के सामान करे और हमारे लिए भी आसानियां पैदा करें।

आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मजीद अहमद साहिब पुत्र हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब का देहांत इसी तरह नसीम अख्तर साहिबा पत्नी मुहम्मद यूसुफ साहिब ऑफ अंबा नोरिया ज़िला शैखूपुरा पाकिस्तान की वफात मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 अप्रैल 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज भी मैं कुछ बदर के सहाबा का वर्णन करूंगा। इनमें से पहले हैं हज़रत आमिर बिन रबिया। इन का खानदानहज़रत उमर के पिता खत्ताब का सहयोगी था जिन्होंने हज़रत आमिर को अपना पुत्र बनाया हुआ था यही कारण है कि आप पहले आमिर पुत्र ख़त्ताब के नाम से प्रसिद्ध थे परंतु जब पवित्र कुरआन ने प्रत्येक को अपने वास्तविक पिता की तरफ नाम देने का आदेश दिया तो उसके बाद आमिर बिन खत्ताब के स्थान पर अपने पिता रबिया की तरफ नाम लगा कर आमिर बिन रबिया पुकारे जाने लगे

यहां उन लोगों के लिए इस बात की स्पष्ट हो गई है जो अपने रिश्तेदारों के, प्रियों के बच्चे अडॉप्ट करते हैं और बड़े होने तक उनको यही नहीं पता होता कि उनका वास्तविक पिता कौन है और शादी इत्यादि सरकारी कागज़ों इत्यादि पर मूल वालिद के स्थान पर उस पिता का नाम होता है जिसने उन को गोद लिया होता है और फिर बाद में इस वजह से कई मसले पैदा होते हैं फिर लोग पत्र लिखते हैं कि इस तरह कर दिया जाए इस तरह कर दिया जाए इसलिए हमेशा कुरआन के आदेश के अनुसार अनुसरण करना चाहिए सिवाय उन बच्चों के जो संस्थाओं की तरफ से मिलते हैं या लिए जाते हैं उनके माता-पिता के बारे में बताया नहीं जाता। बाहरहाल इस स्पष्टता के बाद उनके बारे में वर्णन करता हूं।

यह जो वर्णन हुआ था कि उनके सहयोगी थे इस सहयोग के संबंध के कारणहज़रत उमर औरहज़रत आमिर में अंतिम समय तक दोस्ती के संबंध स्थापित रहे यह बिल्कुल आरंभ में ईमान लाए थे। जब ईमान लाए उस समय तक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दारे अरकम में पनाह लेने वाले नहीं थे।

(सैरुस्सहाब भाग 2 पृष्ठ 333 प्रकाशन दारुल इरशाअत कराची)

हज़रत आमिर अपनी पत्नी लैला पुत्री अबी हश्मा के साथ हब्शा की तरफ हिदरत कर गए। फिर इस के बाद मक्का लौट आए। वहां से अपनी पत्नी के साथ मदीना की तरफ हिजरत कर गए।हज़रत आमिर बिन रबिया की पत्नी को सबसे पहले मदीना हिजरत करने वाली औरत होने का सम्मान प्राप्त है आप जंग बदर और अन्य समस्त जंगों मेंहज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम के साथ थे। आपकी वफात 32 हिजरी में हुई। आप कबीला अनज़ से थे।

आमिर वर्णन करते हैं कि उन्हें आं हज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम ने फरमाया कि जब कोई आदमी तुम में से जनाज़ा को देखे और उसके साथ जाना न चाहे तो चाहिए कि खड़ा हो जाए यहां तक कि वह जनाज़ा उसे पीछे छोड़ दे या रख दिया जाए।

अब्दुल्ला बिन आमिर अपने पिताहज़रत आमिर से वर्णन करते हैं कि वह एक रात नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए यह वह ज़माना थी कि मुसलमान हज़रत उस्मान के बारे में मतभेद कर रहे थे उस समय उपद्रव का आरंभ हो गया था और हज़रत उस्मान पर आलोचना करते थे तो कहते हैं कि नमाज के बाद वह सो गए तो ख्वाब में उन्होंने देखा कि उन्हें कहा गया कि उठ और अल्लाह तआला से दुआ मांग कि तुझे इस उपद्रव से नजात दे जिस से उसने अपने नेक बंदों को नजात दी है। अत: हज़रत आमिर बिन रबिया उठे और उन्होंने नमाज पढ़ी और इस के बाद इसी हवाले से दुआ मांगी आत: इसके बाद वह बीमार हो गए और फिर वह ख़ुद घर से नहीं निकले उनका जनाज़ा ही निकला।

(असदुल ग़ाब: भाग 3 पृष्ठ 118-119 आमिर बिन रबिया प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)।

अल्लाह तआला ने उनके लिए इस से बचने की यह सूरत बनाई।

हजरत आमिर बिन रबिया वर्णन करते हैं कि मैं तवाफ के समय आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ था आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जूती का तस्मा टूट गया मैंने वर्णन किया है अल्लाह तआला के रसूल मुझे दें मैं ठीक कर देता हूं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह प्राथमिकता देना है और मैं प्राथमिकता दिए जाने को पसंद नहीं करता।

(शरह ज़रकानी भाग 6 पृष्ठ 49 अलफज़ल सानी फीमा अकरमल्लाहू तआला दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1996 ई)

इस सीमा तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम अपना काम ख़ुद करने के आदी थे।

एक व्यक्ति आमिर बिन रबिया का मेहमान बना। उन्होंने उस की ख़ूब मेहमान नवाज़ी की और सम्मान किया और वह आदमी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से सेहज़रत आमिर के पास आया और कहा मैंने हुजूर सल्लल्लैहो अलैहि वसल्लम से एक ऐसी वादी मांगी थी पूरे अरब में इससे अच्छी वादी नहीं औरहज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह मुझे प्रदान कर दी अब मैं चाहता हूं कि उस वादी का एक टुकड़ा आपको दे दूं जो आपकी जिंदगी में आपका हो और आप के बाद आपकी संतान के लिए हो।हज़रत आमिर ने कहा मुझे तुम्हारे टुकड़े की कोई जरूरत नहीं क्योंकि आज एक ऐसी सूरत नाजिल हुई है जिसने हमें दुनिया में दुनिया ही भुला दी है और वह यह है

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ

(अल्अंबिया 2)(हयातुस्सहाब: लेखक यूसुफ कांधलवी भाग 2 पृष्ठ 523 प्रकाशक अन्नाशेरून 1999 ई)अर्थात के लोगों के लिए उनका हिसाब करीब आ गया और वह बावजूद इसके अज्ञानता के अवस्था में मुंह फेरे हुए हैं।

खुदा तआला के भय की यह अवस्था थी इन चमकते हुए सितारों की और यही वह लोग थे जो वास्तविक तौर पर धर्म को दुनिया भर में प्राथमिकता करने वाले थे

हज़रत आमिर बिन रबिया से रिवायत है कि ज़ैद बिन अमरो ने कहा मैंने अपने क़ौम का विरोध किया और इब्राहिम अलैहिस्सलाम की मिल्लत का अनुसरण किया मुझे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में से एक नबी के प्रकट होने की प्रतीक्षा थी जिसका नाम अहमद होगा परंतु यों लगता है कि मैं उन्हें पा नहीं सकूंगा मैं उन पर ईमान लाता हूं और उनकी सत्यता को मानता हूं मैं गवाही देता हूं कि वह नबी है अगर तुम्हें उन का ज़माना प्राप्त हो जाए तो मेरा सलाम पेश करना। मैं तुम्हें उनके ऐसे चिन्ह बताता हूं कि वह तुम्हारे लिए छुपे नहीं रहेंगे। वह न ज्यादा लंबे होंगे ना ही बहुत छोटे कद के होंगे। उनके बाल बहुत अधिक न होंगे ना बहुत ही काम उनकी आंखों में लाली हर समय रहेगी उनके कंधों के मध्य मोहरे नबुव्वत होगी उनका नाम है अहमद होगा। यह शहर मक्का उनके रहने का स्थान और बैअत का स्थान होगा फिर उनकी कॉम उन्हें यहां से निकाल देगी वह उनके संदेश को

पसंद नहीं करेगी फिर वह मदीना की तरफ हिजरत करेंगे फिर इनका मामला विजयी होगा। उनके कारण से धोखा में न पढ़ना। मैंने इब्राहिम अलैहिस्सालम के धर्म की तलाश में सरी जगह छान मारी और मैंने यहूदियों ईसाईयों और आग की पूजा करने वालों से पूछा उन्होंने बताया कि यह धर्म तुम्हारे पीछे है उन्होंने मुझे वही चिन्ह बताए जो मैंने तुम्हें बता दिए हैं उन्होंने बताया उनके बाद कोई नबी नहीं आएगा।

हज़रत आमिर ने जब आंहज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम प्रकट हुए तो मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़ैद के बारे में बाताया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैंने ज़ैद को जन्नत में देखा है कि वह अपना दामन घसीट रहा था।

(सबलुल हुदा वर्रिशाद भाग 1 पृष्ठ 116 प्रकाशक दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 1993 ई)

यह जो रिवायत है कि नबी नहीं आएगा इससे यह भी अभिप्राय नहीं कि आंहजरत सल्लल्लाहो वसल्लम ने उम्मती नबी की जो भविष्यवाणी की थी वह ग़लत है इसका अर्थ यह है कि आप ही आखरी शरीयत वाले नबी हैं और कोई नई शरीयत नहीं आएगी और जो भी आने वाला आएगा आप की क्यों ग़ुलामी में ही आएगा यही हमें हदीसों से और कुरान करीम से पता चलता है।

आं हज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम ने हज़रत आमिर का हज़रत यज़ीद बिन मुन्ज़िर से भाईचारा स्थापित करवाया।(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 296 दीरुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई) हज़रत आमिर बिन रबिया की हज़रत उस्मान की शहादत के कुछ दिनों बाद वफात हुई।

(असदुल ग़ब्ब: भाग 3 पृष्ठ 119 प्रकाश दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1999ई)

दूसरे सहाबी हैं हज़रत हराम बिन मिलहान हैं हज़रत हराम बिन मिलहान का सम्बंध अंसार का कबीला बनू अदी बिन नज्जार से था। आप के पिता का नाम मिलहान पुत्र ख़ालिद था। हज़रत हराम बिन मिलहान की माता का नाम मुलैका बिन मालिक था। आप की एक बहन हज़रत उम्मे सलीम थीं। जो हज़रत अबू तलहा अंसारी की पत्नी और हज़रत अनस बिन मालिक की माता थीं। आप की दूसरी बहन हज़रत उम्मे हराम उबाद बिन सामत की पत्नी थीं। हज़रत हराम बिन मलहान हज़रत अनस के मामू थे और जंग बदर में शामिल हुए थे। और बैअरे मऊना के दिन शहीद हुए थे। हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि कुछ लोग आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। और कहा कि हमारे साथ कुछ इस प्रकार के आदमियों को भेजें जो हमें कुरआन करीम तथा सुन्नत की शिक्षा दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंसार के 70 सहाबा उन के साथ भिजवा दिए। जो कुरआन करीम के कारी थे। यह कहते हैं कि इन में मेरे मामू हराम भी थे। ये लोग कुरआन करीम पढ़ते थे रात को आपस में दर्स देते और ज्ञान सीखते। दिन को पानी लाकर मस्जिद में रखते जंगल से लकड़ियां चुनते और बेचकर फकीरों के लिए खाना खरीदते।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 390 दारुल कुतुब बैरूत अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)(अल्असाबा भाग 8 पृष्ठ 375-376 हराम बिन मिलहान भाग 8 पृष्ठ 408-409 दारुल कुतबु अल्इलमिया बैरूत 1995 ई) हज़रत हराम बिन मिलहान का बैअरे मेऊना की घटना का कुछ वर्णन में कुछ महीने पहले ख़ुत्बा में कर चुका हूं। बैअरे माऊना की बाकी घटना एक दो स्थानों में इस से पहले वर्णन हो चुकी है इस बारे में बुखारी की कुछ रिवायते हैं जो प्रस्तुत करता हूं। जो पहले वर्णन नहीं हुई।

हजरत अनस बिन मालिक से रिवायत हैं कि जब हज़रत हराम बिन मिलहान को बैअरे माऊना वाले दिन भाला मारा गया तो उन्होंने अपना ख़ून अपने हाथ में लिया और अपने मुंह तथा अपने सिर पर झिड़का और इस के बाद कहा कि फुज़तो बिरब्बे काबा अर्थात काबा के रब्ब की कसम मैंने अपने लक्ष्य को पा लिया।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4092)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाह तआला से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास रिअल ज़कवान उसय्या और बनू लहयान कबीलों के कुछ लोग आए और कहा कि हम मुसलमान हो गए हैं। और उन्होंने आप से अपनी कौम से मुकाबला के लिए मदद मांगी। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन की सत्तर सहाबा से मदद की। हज़रत अनस कहते हैं कि हम उन्हें कारी कहते थे। दिन को वे लकड़ियां लाते और रात को नमाज़े पढ़ते। वे लोग उन्हें ले गए। जब बेअरे मऊना पर पहुंचे तो उन लोगों ने ग़द्दारी की और उन्हें कत्ल कर डाला। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक महीने तक और कुछ रिवायतों में चालीस दिन तक नमाज़ में खड़े हो कर रिहल और ज़कवान और बनू लिहयान के लिए बद दुआ करते रहे।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 3064)

हज़रत अनस से रिवायत है कि जब कारी लोग शहीद किए गए तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महीने भर खड़े होकर बहुत विनम्रता से दुआ की। और बुखारी की दूसरी रिवायत है कहते हैं कि मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं देखा कि आपने कभी इससे बढ़कर दुख किया हो।

(सहीह अल्बुख़ारी, हदीस 1300)

फिर एक रिवायत है हज़रत अनस से ही वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रुकूअ के बाद खड़े होकर एक महीने तक बनो सुलैम के कुछ क़बीलों के ख़िलाफ दुआ करते रहे। उन्होंने कहा कि आप ने कारियों में से चालीस या सत्तर आदमियों को कुछ मुशरिक लोगों के पास भेजा तो ये कबीले आड़े आए और उन्हें मार डाला हालांकि उनके और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बीच अनुबंध था। फिर यह भी वही बयान है कि मैंने कभी आपको किसी के बारे में इतना दुखी नहीं देखा है जितना आप ने इन कारियों पर दुख किया।

(सही अल-बुख़ारी, हदीस 3170)

फिर एक हवाला है इब्ने हश्शाम की सीरत का। जब्बार बिन सालमा जो अमरो बिन तुफैल के साथ इस अवसर पर मौजूद थे बाद में यह मुसलमान हो गए थे। यह कहते हैं कि मेरे इस्लाम को स्वीकार करने का कारण यह था कि मैंने दो कंधों के बीच एक आदमी को नेज़ा मार। मैंने देखा कि भाला की नोक उसके सीने के पार हो गई । तब मैंने सुना कि यह व्यक्ति यह कहता है। फुज़ते वरब्बिल कअबा काबा के ख़ुदा की कसम मैं सफल हो गया। इस पर मैंने खुद से कहा कि यह कैसे सफल रहा। क्या मैंने इस व्यक्ति को मार नहीं डाला? जब्बार कहते हैं, मैंने बाद में उनके इस कथन के बारे में पूछा, तो लोगों ने कहा कि उन के यह कथन शहीद होने के बारे में हैं। जब्बार कहते हैं कि मैंने कहा कि वह वास्तव में ख़ुदा के निकट सफल हुए।

(अस्सीरतुल नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 603, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इमिया लेबनान 2001 ई)

दो तीन सहाबा के बारे में इस प्रकार की घटनाऐं प्राप्त होती हैं। मिलते जुलते शब्द हैं। ये वे लोग थे जिन्होंने ख़ुदा तआला की इच्छा को प्राथमिकता दी और सांसारिक उपलब्धियों उन का वास्तविक उद्देश्य नहीं था। अल्लाह तआला ने भी उनकी इस निय्यत के कारण उन के बारे में एलान किया कि अल्लाह तआला उन से राज़ी हो गया।

बेयर माऊना के अवसर पर शहादत के समय सहाबा ने अल्लाह तआला से यह दुआ की थी कि اَللّٰهُمَّ بَلِّغْ عَنَّا نَبِيَّنَا اَنَّا قَدْ لَقِيْنَاكَ فَرَضِيْنَا عَنْكَ وَرَضِيْتَ عَنَّا कि हे अल्लाह ! आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमारी अवस्था से सुचित कर दे। कि हम तुझ से जा मिले हैं। और हम तुझ से और तू हम से राज़ी है। हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि हज़रत जिब्राईल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप को ख़बर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वे साथी अल्लाह तआला से जा मिला और अल्लाह उन से राज़ी है।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 267 दारुल कुतुब बैरूत अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब इस घटना के बारे में बताते हैं कि बेयर माऊना की घटनाओं और रजी से अरब के कबीलों के इस अत्यधिक द्वेष और वैर का पता चलता है जो वे इस्लाम और इस्लाम के अनुयायियों के बारे में अपने मन में रखते थे। यहां तक कि इन लोगों के इस्लाम के ख़िलाफ अपमानित करने वाले झूठ झूठ और छल और धोखे से भी कोई परहेज नहीं था और मुसलमान बावजूद अपनी पूर्ण होशियारी और जागरूक होने के कई बार अपनी मोमिना फिरासत के सुधारणा के कारण इनके शिकार हो जाते थे। कुरआन के हाफिज़, नमाज़ पढ़ने वाले थे, तहज्जुद पढ़ने वाले मस्जिद के एक कोने में बैठकर अल्लाह का नाम लेने वाले और फिर गरीब फ़ाकों के मारे हुए ये वे लोग थे जिन्हें उन अत्याचारियों ने धर्म जानने के बहाने अपने वतन में बुलाया और फिर जब मेहमान के रूप में जैसे ही वह उन की मातृभूमि में पहुंचे, उन्होंने उन्हें बहुत अत्याचार पूर्वक कत्ल कर दिया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन घटनाओं का जितना भी दुख: होता उतना कम था। लेकिन उस समय आप ने रजी और बेयर माऊना के खूनी हत्यारों के खिलाफ कोई जंगी कार्रवाई नहीं फरमाी। (सदमा ज़रूर हुआ लेकिन उनके ख़िलाफ युद्ध की कार्रवाई कोई नहीं हुई।) लेकिन इस खबर के आने की तारीख से लेकर बराबर

तीस दिन तक आप हर दिन सुबह की नमाज़ के क़याम में बहुत वेदना तथा दर्द से कबीलों रिल और रज़कवान और उसय्या और बनो लहयान का नाम ले लेकर सर्वशक्तिमान ईश्वर के सम्मुख यह दुआ करते कि हे मेरे रब्ब! तो हमारी स्थिति पर दया और इस्लाम के दुश्मनों के हाथ को रोक जो तेरे धर्म को मिटाने के लिए इस बेरहमी और निर्दयता के साथ निर्दोष मुसलमानों का खून बहा रहे हैं।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीम हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 520 से 521)

अत: आज भी दुश्मन के हाथों को रोकने के लिए ख़ुदा तआला से मदद मांगने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला ही है जो उन लोगों की पकड़ के सामान करे। और हमारे लिए भी आसानियां पैदा हों।

हजरत साद बिन क़ौला एक सहाबी थे, और कुछ के निकट आप इब्न अबी रहम बिन अब्दुल उज़्ज़ा आमिर के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे। आप इस्लाम लाए इस्लाम स्वीकार करने वाले प्रारम्भिक लोगों में आप का नाम शामिल होता है। आप हब्शा की तरफ दूसरी हिजरत करने वालों में शामिल थे। हज़रत साद बिन ख़ौला ने मक्का से मदीना हिजरत की तो आपने हज़रत कुलसूम बिन हदम के यहां काम किया। इब्ने इस्हाक मूसा बिन उक्बा ने आप का नाम बदर वालों में शामिल किया है। हज़रत साद बिन ख़ौला जब बदर की जंग में शामिल हुए तो उस समय आप की आयु 25 वर्ष थी। आप जंग उहद जंग खंदक और जंग हुदैबिया में शामिल हुए। आप हज़रत साद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो हज़रत सुबैया उसलेमा के पति थे। आप की वफात हज्जतुल विदा के अवसर पर हुई। आप की वफात के कुछ समय बाद आप के बच्चा का जन्म हुआ तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप की पत्नी से कहा कि तुम इस बच्चा के जन्म के बाद जिस से चाहो शादी कर सकती हो। आप के हज्जतुल विदा के अवसर पर वफात पा जाने के बारे में तिबरी के अतिरिक्त किसी ने मतभेद नहीं किया। उन के निकट उन का वफात पहले हुई थी।

(असदुल ग़ाबह, जिल्द 2, पृष्ठ 209 से 210, साद बिन ख़ौला, मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई), (अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3, पृष्ठ 217, साद बिन ख़ौला, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1996)

फिर एक सहाबी हैं। हज़रत अबू अल-हशीम बिन अत्तहयान अन्सारी का वास्तविक नाम मालिक था। परन्तु आप अपने उप नाम अबुल हशीम से प्रसिद्ध हुए। आपकी मात बिन्ते अतीक कबीला बिल्ली से थीं। अक्सर शोधकर्ताओं के निकट आप कबीला औस की शाखा बिल्ली से थीं जो कबीला बनू अब्दुल अशहल के सहयोगी थे।

(अल्असाब: फी तमीज़िस्सहाबा, जिल्द 7, पृष्ठ 365, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई) (अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3, पृष्ठ 341, अबूअलहसीम मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई), (सैरुस्सहाबा जिल्द 3, पृष्ठ 215, अबू अलहसीम , मुद्रित दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

मुहम्मद बिन उमर कहते हैं कि हज़रत अबुल हसीम रज़ि अल्लाह तआला अन्हो जाहिलियत के ज़माने में भी बुतों की उपासना से विमुख थे और उन्हें बुरा भला कहते थे। हज़रत असद बिन ज़राराह और हज़रत अबू हसीम तौहीद के मानने वाले थे। यह दोनों प्रारंभिक अंसारी हैं जिन्होंने मक्का में इस्लाम स्वीकार किया। (अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3, पृष्ठ 341, अबू अलहसीम, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990) कुछ के निकट बैअत अक़बा ऊला से पहले जब हज़रत असद बन ज़रारह छह आदमियों के साथ मक्का से मुसलमान होकर मदीना में आए तो हज़रत अबुल हसीम को इस्लाम की दावत दी। आपने इस्लाम को तुरंत स्वीकार कर लिया क्योंकि आप पहले फितरत के धर्म की तलाश में थे। फिर बैअत अक़बा ऊला के समय जो बारह आदमयों का प्रतिनिधिमंडल मक्का गया तो इस प्रतिनिधिमंडल में आप शामिल थे। मक्का पहुंच कर आप ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की। (सैरुस्सहाबा, जिल्द 3, पृष्ठ 215, अबू अल-हसीम, मुद्रित दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इस बारे में लिखा है किआं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों से अलग होकर उन से एक घाटी में। उन्होंने यसरब की स्थिति से रिपोर्ट की और अब की बार सब ने नियमित आप के हाथ पर बैअत की। यह अनुष्ठान मदीना में इस्लाम की स्थापना का मुख्य नींव का पत्थर था। चूंकि अब तक तलवार का जिहाद अनिवार्य नहीं हुआ था इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे केवल इन शब्दों में बैअत ली जिन में आप जिहाद फर्ज़ होने के बाद औरतों से बैअत लिया करते थे। अर्थात यह कि हम ख़ुदा को एक जानेंगे। शिर्क नहीं करेंगे। चोरी नहीं करेगा। व्यभिचार नहीं करेंगे। कत्ल से रुकेंगे आप किसी पर आरोप नहीं लगाएंगे और हर अच्छे काम में आपका पालन करेंगे। बैअत के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर आप ईमानदारी और मज़बूती के साथ इस प्रतिज्ञा पर कायम रहे तो तुम्हें जन्नत नसीब होगी और अगर कमजोरी दिखाई तो तुम्हारे मामले अल्लाह तआला के साथ हैं वह जिस तरह चाहेगा करेगा। इस बैअत इतहिास में बैअत उक़बा ऊला के नाम से मशहूर है क्योंकि वह जगह जहां बैअत ली गई थी उक़बा कहलाती है जो मक्का और मिना के बीच स्थित है। उक़बा के शाब्दिक अर्थ (लिखे हैं) उच्च पहाड़ा रास्ता हैं।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए, पृष्ठ 224 से 225)

हज़रत अबूल हसीम उन छह लोगों में शामिल थे जिन्होंने अपनी क़ौम में सबसे पहले, मक्का जा कर इस्लाम स्वीकार किया और फिर मदीना लौट आए और इस्लाम प्रकाशित किया। उनके बारे में एक रिवायत यह भी मिलती है कि आप पहले अंसारी हैं जो मक्का जाकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिले। आप बैअत उक़बा ऊला में शामिल हुए और सभी शोधकर्ताओं का यह संयोग है कि बैअत उक़बा सानिया जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सत्तर अंसार में से बारा नकीब चुने तो आप भी इन नकीबों में एक थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3, पृष्ठ 341 ता 342, अबू हसीम, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) नकबाय नकीब की जमा है, जिसका अर्थ है कि जो ज्ञान और क्षमता रखने वाले लोग थे उन्हें उनका सरदार या नेता या निगरान नियुक्त किया था।

एक हदीस रिवायत है कि हज़रत अबूल हसीम ने कहा, हे अल्लाह के रसूल!" हमारे और कुछ अन्य कबीलों के बीच कुछ पारस्परिक रूप से सहमत समर्थन हैं। जब हम इस्लाम स्वीकार कर लेंगे और बैअत करके आप ही के हो जाएंगे तो इन समझौतों का मामला जैसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाऐंगे वैसा ही होगा। (अबुल हसीम इस अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में अर्ज़ करते हैं कि) इस अवसर पर मैं आपकी सेवा में एक अनुरोध करना चाहता हूं कि हे अल्लाह के रसूल! अब हमारा संबंध आप से स्थापित हो रहा है जब अल्लाह तआला आप की सहायता फरमाए और अपनी क़ौम पर आप विजयी हों तब आप हमें छोड़ कर वापस अपने लोगों में न चले जाएं और हमें दाग़ जुदाई न दें। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सुनकर मुस्कुराए और कहा अब तुम्हारा खून मेरा खून हो चुका है। अब मैं तुम से हूँ और तुम मुझ से हो। जो तुमसे युद्ध करेगा वह मुझ से युद्ध करेगा और जो तुम से सुलह करेगा वह मुझ से सुलह करेगा। (अहमद बिन हंबल, जिल्द 5, पृष्ठ 427 हदीस 15891, मुद्रित आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिजरत मक्का के बाद हज़रत उस्मान बन अफवान और हज़रत अबुल हसीम अंसारी के बीच भाईचारी स्थापित फ़रमाया।

(अलअसाब: फी तमीज़िस्सहाबा, जिल्द 7, पृष्ठ 365 इब्ने हसीम , मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक अंसारी व्यक्ति के पास गए और आप के साथ आप के एक साथी भी थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा कि अगर तुम्हारे पास पानी हो या आज रात मशक में रहा हो तो पलाओ अन्यथा हम यहीं से मुंह लगाकर पानी पी लेंगे। पानी वहां बह रहा था। वह व्यक्ति अपने बगीचे में पानी डाल रहा था। व्यक्ति ने कहा, हे अल्लाह के रसूल! मेरे पास रात का पानी है, आप झौपंड़ी की तरफ चलिए। वह व्यक्ति, अर्थात हज़रत अबुल हसीम आप तथा आप के साथी दोनों को ले गया और एक प्याले में पानी डाला। फिर इस पर घर की बकरी का दूध दोहा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह पेय पदार्थ पिया फिर उस व्यक्ति ने भी पिया जो आपके साथ था। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सहीह अल्बुख़ारी, किताबुल अशरब: हदीस 5613)

इसी तरह एक रिवायत है हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बताते हैं कि हज़रत अबु हसीम बिन तहयान ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए खाना तैयार किया और अल्लाह तआला के रसूल और आपके सहाबा को आमंत्रित करता है। जब सभी भोजन खा चुके, तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा

को कहा। अपने भाई को इनाम भी दें। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "हे अल्लाह तआला के रसूल!" हमें इसके साथ क्या करना चाहिए? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब कोई व्यक्ति किसी के घर में जाकर खाना खाए और पानी पिए तो इसके लिए दुआ करे। यह इस के लिए इस का भोजन का बदला है। (अबू दाऊद किताब हदीस 3853)ये हैं उच्च नैतिकता जो हर मुसलमान के लिए आवश्यक हैं।

हज़रत अबु हुरैरा वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसे समय में घर से बाहर निकले जब आमतौर पर कोई बाहर नहीं निकलता और न कोई किसी से मिलता है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हज़रत अबू बकर आए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा, हे अबू बकर तुझे क्या बात ले आई? (यानी घर से बाहर आए) तो उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाकात के लिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे मुबारक को देखने के लिए और उस को सलामती भेजने निकला हूं। थोड़ी देर बात हज़रत उमर भी आ गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा, "हे उमर, तुम्हें क्या चीज़ लाई? हज़रत उमर ने कहा, हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे भूख लगी है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा, मुझे भी भूख लगी है। तब आप सभी हज़रत अबुल हासीम अंसारी के घर की ओर गए। उनके पास बकरियां और खजूर के पेड़ थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे में न घर पाया। आप ने अबूल हसीम की पत्नी से कहा, तुम्हारा पति कहां है? उसने कहा कि वह हमारे लिए मीठा पानी लेने के लिए गया है। थोड़ी देर बाद,हज़रत अबुल हसीम भी मुश्क उठाए हुए आ गए। उन्होंने मुशक एक तरफ रख दी और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लिपट गए और अपनी जान व माल कुरबान करने लगे। मेरे माता-पिता आप पर कुरबान हों। हज़रत अबू हशीम आप तीनों को अपने बाग़ में ले लिया और एक चादर बिछाई। फिर वह जल्दी से बाग़ में गए और खजूर का पूरा गुच्छा ले आए, जिस में कुछ पक्के हुए और कुछ कच्चे खुजूर थे। अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हे अबुल हसीम ! तुम पूरे गुच्छा के स्थान पर पक्की खुजूरें चुन कर क्यों नहीं ले आए?। हज़रत अबुल हसीम ने कहा मैं चाहता हूं कि आप इस में से अपनी पसंद के अनुसार खाएं। हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में से खाया और पानी पीया। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ख़ुदा की कसम यह वह नेअमतें हैं जिनके बारे में तुम से कयामत के दिन पूछा जाएगा। ठंडी छाया और ठंडा पानी और ताजा खजूर के पेड़। फिर अबुल हसीम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे लिए भोजन की व्यवस्था करने के लिए उठे। आप ने फरमाया दूध देने वाले बकरी को मारो ज़िब्ह करो। इस पर उन्होंने एक बकरी का बच्चा ज़िब्ह किया और इसे आप के पास लाया और सब ने इस से खाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा, क्या तुम्हारे पास कोई नौकर है? तो अबू हसीम ने फरमाया, नहीं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब हमारे पास कोई जंगी कैदी आत तो हमारे पास आना। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास दो कैदी आए, अबू हसीम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम उनमें से एक को पसंद कर लो।" हज़रत अबू हसीम ने फरमाया, हे अल्लाह के रसूल ! आप मेरे लिए चुन दें। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस से सलाह ली जाती है वह अमीन होता है। (यह बात भी विशेष रूप पे प्रत्येक के लिए नोट करने वाली है कि जिस से सलाह ली जाती है वह अमीन होता है इसलिए हमेशा अच्छी सलाह देनी चाहिए।) फिर आप ने फरमाया, इस नौकर को ले लो, क्योंकि मैंने उसे इबादत करते देखा है। और जो गुण उस नौकर का बताया वह यह कि वह इबादत करता है। अल्लाह तआला को याद करने वाला है। उसके दिल में नेकी है। उसके साथ फिर उसने अच्छा व्यवहार करने के लिए कहा। हज़रत अबुल हसीम अपनी पत्नी के पास लौटे और उसे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहत के बारे में बताया तो वह कहने लगी कि आप इस नसीहत का अधिकार पूरी तरह अदा नहीं कर सकोगे जो तुम्हें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी है अर्थात अच्छा व्यवहार करने के लिए अब एक औरत है और उस का गुण देखें। काम करने वाले जो मिला है उस के बारे में यह देखें कि यह है मोमिनाना शान। उनकी पत्नी ने उन्हें यह कहने लगीं कि अधिकार तो तभी अदा होगा कि तुम इसे आज़ाद कर दो। जो तुम्हें नौकर मिला है उसे आज़ाद कर दो। इस पर हज़रत अबुल हसीम ने उसे आज़ाद कर दिया।

(सुनन अत्तिरमज़ी, किताबुल ज़हुद हदीस 2369)

यह शान थी उन सहाबा की।

हज़रत अबुल हसीम जंग बद्र, जंग उहद, जंग ख़ंदक और अन्य सभी जंगों में भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। जंग मूत: में हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा की शहादत के बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबुल हसीम को ख़ैबर में खजूरों के फलों का अनुमान करने के लिए भी भेजा था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद जब हज़रत अबूबकर ने आप को खजूरों के अनुमान के लिए भिजवाना चाहा तो उन्होंने जाने से क्षमा कर दिया। हज़रत अबू बकर ने कहा, आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए तो खजूरों के अंदाज़ा किया करते थे, अनुमान के लिए जाया करते थे। इस पर हज़रत अबुल हसीम ने कहा कि मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए खजूरो का अनुमान किया करता था जब मैं अनुमान कर वापस आता था तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे लिए दुआ फरमाते थे। तब उन्हें वह विचार आ गया कि आं हज़रत की दुआएं लेते थे और एक भावनात्मक स्थिति थी। यह सुनकर हज़रत अबूबकर ने उन्हें न भिजवाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3, पृष्ठ 342, अबूल हसीम, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

तो यह एक भावनात्मक स्थिति थी जो उन्होंने वर्णन की अन्यथा यह लोग वे थे जो हमेशा पालन करने वाले थे। अवज्ञा करने वाले नहीं थे। अगर हज़रत अबूबकर फिर भी आदेश देते तो यह हो नहीं सकता था कि वह अनुपालन न करते और हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहो तआला का आप को दोबारा न कहना इस बात को दर्शाता है कि हज़रत अबूबकर भी उनकी इस भावनात्मक स्थिति का विचार आ गया और समझ गए। इसलिए आदेश नहीं दिया। फिर जब हज़रत उमर ख़ैबर के यहूदी को निर्वासित किया तो हज़रत उमर ने उन की तरफ इस प्रकार के लोगों को भेजा जो उनकी ज़मीन की कीमत का अनुमान करें। हज़रत उमर ने उन की तरफ हज़रत अबुल हसीम और हज़रत फरवह बिन अम्रो और हज़रत ज़ैद बिन साबित को भेजा। उन्होंने खैबर वालों की खजूरों तथा जमीन की कीमत लगाई। उमर ने ख़ैबर वालों को उनकी आधी कीमत दे दी जो कि पचास हज़ार दिरहम से अधिक थी।

(किताबुल मग़ाज़ी भाग 2 पृष्ठ 165, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2004 ई)

यहाँ अभी देखें कि वह उस जगह चले गए। वह भावनात्मक स्थिति नहीं थी। अब समय बीत गया था इसलिए उन्हें कोई रोक नहीं थी। कोई ऐसा अमर निषेधात्मक नहीं था।

अस्सलामो अलैकुम कहने के बारे में भी एक रिवायत उनसे मिलती है। हज़रत अबुल हसीम से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो अस्सलामो अलैकुम कहता है उसे दस नेकियां मिलती हैं। अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह कहने वाले को बीस नेकियाँ मिलती हैं। और अस्सलामो अलैकुम वरहमुतल्लाह व बरकातुहो कहने वाले को तीस नेकियाँ मिलती हैं।

(अल्असाब: फी तमीज़िस्सहाब:, जिल्द 7, पृष्ठ 366, अबुल हसीम, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत अबुल हसीम की वफात के समय के बारे में अलग अलग राय पाई जाती हैं। कुछ के निकट आपकी मृत्यु हज़रत उमर के समय में हुई थी। कुछ के निकट आप की मृत्यु बीस या इक्कीस हिजरी में हुई थी और यह भी कहा जाता है कि आप जंग सिफ़्फ़ीन सैंतीस हिजरी में हज़रत अली की तरफ से लड़ते हुए शहादत पाई।

(अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3, पृष्ठ 342, अबू हसीम, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990), (असदुल ग़ाबह, जिल्द 5, पृष्ठ 13, अबू हसीम मालिक, मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)

तो ये थे वे सहाबी जिन्होंने हमारे लिए उस्वा स्थापित किए और हमें बहुत सारी बातों के बारे में बताया भी। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करता चला जाए।

जुम्मा की नमाज़ के बाद में दो जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। यह पहला जनाज़ा आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मजीद अहमद साहब का है जो हज़रत साहिबज़ादा बशीर अहमद साहिब के बेटे थे। 14 अगस्त को 94 वर्ष की आयु में उनकी वफात

हुई है इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन। उन का दिल का ऑपरेशन 2000 ई में अमेरिका में हुआ था उसके बाद वहां फालिज का हमला हुआ उसके बाद लगभग बिस्तर पर ही रहे। 18 जुलाई 1924 ई को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब और आदरणीय सरवर सुल्तान बेगम साहिबा पुत्री हज़रत ग़ुलाम हसन साहिब पेशावरी के यहां का कादियान में उनका जन्म हुआ। आरंभिक शिक्षा कादियान में प्राप्त की और तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल से मैट्रिक पास किया। 1949 में गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से m.a. हिस्ट्री उच्च नंबरों में पास किया। उनके पास होने पर जब लोगों ने हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि अल्लाह ताला अन्हो को मुबारकबादें दीं तो और बातों के अतिरिक्त शुक्र गुज़ारी के शब्दों में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने यह भी लिखा कि वास्तव में मोमिनों की जमाअत अपनी ख़ुशी और दु:ख के अवसरों पर एक दूसरे के सहारे पर कायम होती है और एक दूसरे के सहारे से प्रसन्नता और शांति और मज़बूती प्राप्त करती है यही जमाअत के उद्देश्य का लिखते हैं फिर लिखते हैं कि मगर मैं दोस्तों से निवेदन करूंगा कि इस ख़ुशी के अवसर पर शिरकत के अलावा यह भी दुआ करें कि जहां अल्लाह तआला ने प्रिय मजीद अहमद को ज़ाहरी ज्ञान का स्तर पूरा करने की तौफीक़ दी है इसी तरह इसे वास्तविक ज्ञान से भी नवाज़े और फिर इस ज्ञान पर अनुकरण करने का सामर्थ्य प्रदान करे क्योंकि यही हमारी जिंदगियों का वास्तविक उद्देश्य और लक्ष्य है।

(मज़ामीन बशीर भाग 2 परीक्षा पृष्ठ 605)

मिर्ज़ा साहिब ने 7 मई 1944 ई को अपनी जिंदगी धर्म की सेवा के लिए वक्फ कर दी और साथ तालीम भी जारी रखी। दिसंबर 1949 ई में जामेअतुल मुबश्शेरीन में में दाखिल हुए और जुलाई 1954 ई में जामिया पास किया उनका निकाह 28 दिसंबर 1950 ई को जलसा सालाना के तीसरे दिन साहिबज़ादी कुदसिया बेगम साहिबा पुत्री हज़रत नवाब अब्दुल्लाह साहिब और नवाब अमतुल हफीज़ बेगम साहिबा के साथ हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने पढ़ा। उन की औलाद में उन की एक बड़ी बेटी हैं। नुसरत जहां साहिबा जो मिर्ज़ा नसीर अहमद तारिक साहिब जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब की पोते हैं उन की पत्नी हैं। फिर उन के बटे मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब हैं। फिर उन की एक पत्नी दुर्रेसमीन अहमद हैं जो मीर महमूद अहमद साहिब की बहू हैं। फिर उन के बेटे मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादिर साहिब शहीद और उन की पत्नी हैं। अमतुन्नसीर जा सय्यद मीर दाऊद अहमद साहिब की बेटी हैं। फिर इन की एक पांचवी बेटी फाइज़ा साहिबा हैं। जो सय्यद मुदस्सिर अहमद साहिब की बीवी हैं। और यह भी वाक्फे ज़िन्दगी हैं।

जुलाई 1954 में आदरणीया साहिबज़ादा मिर्ज़ा मजीद अहमद साहिब ने शाहिद की डिग्री हासिल की। उनकी पहली नियुक्ति 20 सितंबर 1954 ई को तालीमुल इस्लाम कॉलेज रबवा में हुई। 4 नवम्बर 1956 ई को तहरीक जदीद के अधीन घाना के शहर कमासी में बतौर प्रिंसिपल स्कूल भिजवाया गया। 24 दिसंबर 1963 ई पाकिस्तान लौटे। फिर अप्रैल 1964 ई में तालीमुल इस्लाम कॉलेज में फिर नियुक्ति हुई। फिर जब तालीमुल इस्लाम कॉलेज भुट्टो साहिब के ज़माना में अप्रैल 1975 ई में, इस के राष्ट्रीयकरण के बाद वहां से इस्तीफा दे दिया और अंजुमन को बताया कि मैं एक वक्फे ज़िन्दगी हूं। 3 जुलाई 1975 ई को आप की नियुक्ति नायब नाज़िर तालीम के रूप में हुई। 1976 ई में जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस अमेरिका और यूरोप के देशों के दौरे पर तशरीफ़ ले गए तो मिर्ज़ा मजीद अहमद साहिब निजी सचिव हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालसि साथ थे। 1978 ई में आपको नायब नाज़िर आला नियुक्त किया गया और 1984 ई में यहां से सेवानिवृत्त हुए। उनके दामाद सैयद मुमताज़ अहमद कहते हैं कि उन्होंने सीरतुल महदी के कुछ हिस्से को अंग्रेजी में अनुवाद किया था। और अल फज़ल में नियमित लेख लिखते थे। ज्ञान वाले आदमी थे। यह लेख पुस्तक के आकार में "नुक्ता नज़र" के नाम से प्रकाशित हुए हैं। पढ़ने लिखने का बहुत शौक था। मैंने उन्हें अक्सर लाइब्रेरी में अध्ययन करते हुए देखा है। उनकी बहू मिर्ज़ा गुलाम कादिर शहीद की विधवा अमतुल नासिर लिखती हैं कि बहुत प्यार करने वाले, उच्च हौसला के मालिक थे। एक ईमानदार और खुले दिल वाले व्यक्ति थे। बच्चों से बहुत प्यार करते थे। यह उनकी बहुत बड़ा गुण था कि वे सभी उम्र के लोगों के लिए समायोजित हो जाते थे और उन से एक दोस्त की तरह व्यवहार किया करते थे। बच्चों से भी बड़ों से भी नौजवानों से भी। यह लिखती हैं कि " अपने बेटे मिर्ज़ा गुलाम कादिर शहीद की शहादत पर बहुत धैर्य का नमूना दिखाया और कहती हैं कि शहादत के बाद मिर्ज़ा मजीद अहमद साहिब और उन की पत्नी बहुत अधिक कादिर शहीद के बच्चों का ध्यान रखते। फिर बीमारी का लंबा समय बहुत धैर्य और साहस से बिताया। क्रोध वाली तबीयत नहीं थी। जिस किसी से भी सम्पर्क रखा बहुत ईमानदार होकर रखा। इसी तरह कर्मचारियों का भी ध्यान रखते थे। उन के दामाद मिर्ज़ा नसीर अहमद साहिब लिखते हैं कि "मिर्ज़ा मजीद अहमद साहिब एक राय वाले थे बड़ी स्पष्ट राय थी। यह नहीं कि जो राय चल पड़ी है उसी में हां कर दी बल्कि जो सहीह होता था उस के अनुसार अपनी राय देते थे। अल्लाह तआला उन से क्षमा का व्यवहार करे और उन के साथ रहम करे। और उन के बच्चों को भी नेकियां जारी रखने की तौफीक़ दे।और हमेशा ख़िलाफत और जमाअत से सम्पर्क रखने की तौफीक़ प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा ग़ायब आदरणीया सैयदा नसीम अख्तर साहिबा का है जो मुहम्मद यूसुफ साहिब आंबह नूरिया जिला शेख़ोपुरा की पत्नी थीं। उन की 27 जुलाई 2018 ई में मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सहाबी वाली मुहम्मद साहिब की पोती और काज़ी दीन मुहम्मद साहिब की पुत्री थी। विभाजन के बाद आप की पिता अपने सारे ख़ानदान को कादियान से लेकर रब्वा हिजरत कर गए थे। शादी के बाद, गांव अंबा नूरिया में जीवन व्यतीत किया। इस अवधि के दौरान, विभिन्न पदों पर सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। इस दौरान विभिन्न जमाअत के अहदों काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। 18 साल तक स्थानीय मज्लिस की सदर भी रहीं। नमाज़ तथा रोज़ा की पाबन्द थीं। कुरआन करीम की नियमित तिलावत करने वाली थीं। ग़रीबों का ध्यान रखने वाली थीं। पड़ोसियों से अच्छा व्यवहार करने वाली थीं तथा नेक आदत की थीं। बड़ी श्रद्धावान औरत थीं। कुरआन करीम की नियमित तिलावत करने वालीं और अनुवाद से पढ़ने वाली थीं। ध्यान देने की आदत थी फिर इस पर अनुकरण करने वाली थीं। बच्चों को कुरआन करीम पढ़ाया करती थीं। इन के एक बेटे माली पश्चिमी अफ्रीका में मुबल्लिग़ हैं। माली में उन की पोस्टिंग हुई तो पश्चिमी अफ्रीका में एबोला बीमारी फैली हुई थी। किसी ग़ैर अहमदी ने कहा कि आप को चाहिए कि अपने बेटे को इस अवस्था में वहां पर न भिजवाएं। वहां तो बहुत बीमारी फैली हुई है उन्होंने शीघ्र जवाब दिया कि मैंने अपने दोनों बेचटे ख़ुदा तआला के मार्ग में बहुत दुआओं के बाद वक्फ कर दिए हैं। और वक्फ के बाद ये अल्लाह तआला के हैं। अब मुझे इस बात की परवाह नहीं कि ख़ुदा तआला इन से कैसी और किस तरह की सेवा लेता है। मुझे तो इस बात पर ही बहुत गर्व है कि ख़ुदा तआला ने इन को अपनी सेवा का लिए चुन लिया है। अपने बच्चों को भी नसीहत करतीं कि ख़ुदा तआला ने अगर आप को सेवा का अवसर प्रदान किया है। तो हमेशा अल्लाह तआला तथा अपने वक्फ से वफा करना। मरहूमा मूसिया थीं। उन के बेटे नासिर अहमद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला माली में और अनसर महमूद साहिब मुरब्बी सिलसिला पाकिस्तान में हैं। यह जो माली में उन के बेटे हैं यह जनाज़ा में भी उन के शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला उन को भी सब्र तथा हौसला प्रदान करे। और उन की नेकिया उन की नस्लों में जारी करें।

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

में हुआ जिस ने स्वीडन को भी अपनी लपेट में ले लिया। इस में सब से प्रमुख भुमिका मार्टिन लूथर की थी। उस समय के बादशाह ने धर्म तथा हुकूमत को अलग अलग कर दिया। इस तरह स्वीडन का देश एक सेक्यूलर देश बन गया। इस कठिनाई से बचने के लिए चर्च ने अपनी पहचान बचाने के लिए एक अलग संस्था बनाई जिस का स्वीडन के प्रत्येक लोगों को मेम्बर बनना ज़रूरी नहीं है। इस तरह बुनियादी हुकूक पर भी एक तब्दीली लाई गई जिस के अनुसार प्रत्येक शहरी को अपना धर्म धारण करने की आज्ञा थी। इस कानून के पास होने के बाद ही जमाअत अहमदिया को यहां दाख़िल होने का अवसर मिल गया। और 1976ई में अपनी पहली मस्जिद गोइटे बर्ग में बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 2000ई में इस मस्जिद को बड़ा करने का अवसर मिला। इस मस्जिद में तीन ख़लीफाओं को नमाज़े पढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान अवस्था को देखते हुए लगता है कि स्वीडश लोगों को धर्म से दुश्मनी है। ये लोग अब खुदा का नाम सुनना भी पसन्द नहीं करते। इस प्रकार यह दुनिया में तीसरी बड़ा देश बन गया है जहां धर्म को कोई महत्त्व नहीं है।

प्यारे हुज़ूर यहां धर्म का ख़ाना ख़ाली है इन्शा अल्लाह इन को धर्म की आवश्यकता की शीघ्र ही पता चलेगा। हुजूर अनवर से दुआ का निवेदन है कि हम इन लोगों को इस्लाम का सन्देश उत्तम रूप से पहुंचा सकें। और अन्त में यह देश भी इस्लाम की गोद में आ जाए।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इस तकरीर में साथ में तस्वीर नहीं दिखाई गई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने बच्चों को सवाल करने की आज्ञा दी।

एक बच्चे ने सवाल किया कि जब हम कोई गुनाह नहीं करते तो हमें प्रत्येक समय इस्तिग़फार करने का आदेश क्यों दिया जाता है।

इस के जवाब में हुज़ूर अनवर ने कहा कि इस्तिग़फार का अर्थ क्षमा मांगना है इस्तिग़फार केवल गुनाह के लिए नहीं पढ़ते। बल्कि गुनाह से बचने के लिए भी पढ़ते हैं। नबी भी अपनी क़ौम के लिए इस्तिग़फार पढ़ते हैं और शैतान के हमलों से बचने के लिए भी इस्तिग़फार पढ़ा जाता है। इस्तिग़फार पढ़ने से अल्लाह तआला संभावित गुनाहों से बचाता है। इस्तिग़फार गुनाहों से बचने के लिए ही करते हैं।

एक बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर खुत्बा खड़े होकर क्यों दिया जाता है

इस लिए कि ख़ुत्बा ख़ड़े होकर ही दिया जाता है नमाज़ों की विभिन्न हरकतें रकूअ सिज्दा इत्यादि भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण में करते हैं। ख़ुत्बा इस लिए देते हैं कि यह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

एक बच्चे ने सवाल किया कि कुरआन करीम में Big Bang के बारे में क्या फरमाया है

हुज़ूर अनवर ने इस का जवाब देते हुए फरमाया केवल कुरआन ने इस के बारे में फरमाया है कब कि किसी और धार्मिक किताब ने इस के बारे में नहीं फरमाया। यह सारा ब्रह्मांड कैसे बंद था, कैसे ब्रह्मांड को फाड़ा गया, जिस से पृथ्वी अस्तित्व में आई। Big Bang और Black Hole के बारे मैं बस कुरआन ने ही बताया है।

एक बच्चे ने सवाल किया के अच्छे मौलवी गंदी बातें क्यों करते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अच्छे मौलवी अच्छी बातें ही करते हैं जो अच्छी बातें नहीं करते वह अच्छे कैसे हो सकते हैं आं हज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम की हदीस है इस ज़माने के मौलवी गंदे लोग होंगे जो ज़मीन पीछे सबसे बुरी सृष्टि हो जाएंगे

एक बच्चे ने पूछा हुजूर मैं छठी कक्षा में हूं आगे में कौन सी भाषा सीखूं इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जर्मन भाषा तो अधिकतर लोग जानते हैं तुम स्पेनिश पढ़ो।

इस सवाल के जवाब में कि इमामत कौन करवा सकते हैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि जो अधिक कुरआन का ज्ञान जानता। हो बड़ी आयु का हो, तक्वा में बढ़ा हुआ हो वह पढ़ाए है और गर घर में पढ़ानी है और कोई पढ़ाने वाला नहीं है तो फिर जिस को अधिक आता हो चाहे उसकी आयु 10 साल ही हो वह पढ़ा सकता है अगर मस्जिद में सब बड़ी आयु के हैं और कुर्सियों पर बैठने वाले हैं और कोई दूसरा बड़ी आयु का इमाम ना हो तो फिर छोटी आयु का नमाज़ पढ़ा सकता है।

एक बच्चे ने सवाल किया कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो खुद भी नेक होते हैं और बच्चों की तरबियत भी करते हैं फिर भी उन की औलाद नेक नहीं बनती ऐसा क्यों होता है?

इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया ऐसा हो जाता है हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का बेटा भी ख़राब हो गया था हज़रत नूह ने तूफान के आने पर खुदा से फरियाद कि उसका वादा उसकी खानदान को बचाने का था खुदा तआला ने फरमाया अवज्ञाकारी था इसलिए डूब गया। इस प्रकार के लोग तुम्हारे ख़ानदान में से नहीं हो सकते। हर चीज में एक्सेप्शन होती है फरमाया अब साइंस के तजुर्बे बात करते हैं और कहते हैं कि प्रॉमिसिंग रिज़ल्ट आ गया यह शत प्रतिशत तो नहीं होता यह कोई हिसाब का प्रश्न नहीं है कि एक और एक दो होते हैं साधारण रूप से नेक लोगों के बच्चे ठीक होते हैं परंतु कई बार एक्सेप्शन भी हो जाती हैं तरबीयत करने वाले अच्छे हों उनका नमूना अच्छा हो फिर कई बार ऐसा भी होता है कि बाहर लोग अच्छे होते हैं उनका दूसरों से व्यवहार अच्छा होता है परंतु जब घर में जाते हैं तो उनका व्यवहार बिल्कुल विभिन्न होता है घर जाकर लड़ाई करते हैं सिर्फ एक नेक काम क करने से नमाज़ पढ़ ली सब ठीक नहीं हो जाता सारी नेकियां जमा हो जाती हैं तो फिर यह तक्वा है इस तक्वा से स्तर के कारण तरबियत भी अच्छी होगी उनके बच्चे भी ठीक होते हैं हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने नेकियां की थां परंतु वहां भी एक्सेप्शन आ जाती है

एक बच्चे ने सवाल किया के एक आदमी ने केवल इसलिए जमाअत छोड़ दी कि उस ने एक औरत को सलाम नहीं किया और हाथ नहीं मिलाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कोशिश करें कि औरतों से हाथ ना मिलाया जाए अगर मजबूरी की अवस्था हो जाए और बताया गया हो ऐसी अचानक अवस्था में औरत अपना हाथ आगे बढ़ा दे तो फिर मजबूरी है ऐसी अवस्था में पहले ही बता देते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना तरीका बताया कि वह इस प्रकार की अवस्था में पहले ही बता देते हैं। डेनमार्क में एक राजनीतिक औरत ने शायद भूल से हाथ आगे बढ़ा दिया था हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि अस प्रकार की अवस्था में मैं झुक जाता हूं जिस से वह समझ जाते हैं। इल औरत ने बुरा मनाया जब कि दूसरी डेनिश औरत ने कहा कि प्रत्येक की अपनी रिवायतें होती हैं इस में कोई बुरा मनाने की बात नहीं।

एक अखबार वाले को जब इंटरव्यू दिया तो उसको बता दिया गया कि इस में औरतों का अपना सम्मान है कि उसे हाथ ना मिलाया जाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया एक तरफ शर्म का आदेश है एक तरफ तो अपनी औरतों को लज्जा पैदा करवाते हो फिर क्या तुम उनको कहोगे कि तुम दूसरे मर्दों से हाथ मिलाते रहो एक तरफ तुम शर्म पैदा करते हो दूसरी तरफ खुलम खुला हाथ मिलाते रहोगे तो शर्म जाती रहेगी। इस्लाम के हर एक आदेश में हिक्मत होती है छोटी से छोटी बुराई करने से मना करता है इसलिए इस से बचने की कोशिश करो अगर कोई मजबूरी वाली अवस्था हो पैदा हो जाती है जिस से emberresment हो जाती है तो फिर हाथ मिला लो और फिर चुपके से बैठ जाओ परन्तु यहां भी हिम्मत होनी चाहिए हमने खुदा को ख़ुश करना है अगर किसी कारण से वे हमारे फंक्शन में नहीं आता हैं तो हम ने वास्तविक धर्म पर चलाना है इसलिए बताने के बावजूद अगर कोई बुरा बनाता है नाराज़ होता है तो हम क्या कर सकते हैं।

एक बच्चे ने पूछा कि क्या कारण है कि मुसलमानों के अधिकतर ख़ातम के अर्थ खत्म करने के या आख़री नबी के करते हैं?

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया क्योंकि अधिकतर लोग अज्ञानी हैं इसलिए वे सही अर्थों की तरफ नहीं आते। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक वक्त आएगा जब धर्म बिगड़ जाएगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले को चार बार "नबी उल्लाह" कहा इसलिए हम ख़ातम के वह अर्थ करते हैं कि कि कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता जो आपकी शरीयत को रद्द करे। वही आ सकता है जो कुरआन को मानने वाला हो और आप सल्लल्लाहो वाले वसल्लम की पूर्ण आज्ञापालन करने वाला हो। मसीह और महदी के बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि मेरे और उसके मध्य में कोई नबी नहीं होगा। अर्थात वह आने वाला मसीह नबी होगा इसलिए कुरआन और हदीस को सामने रखते हुए ऐसे अर्थ करने चाहिए जो उचित हों। पाकिस्तान-इंडिया अफ्रीका में लाखों के हिसाब से लोग अहमदिया जमाअत में शामिल हो

रहे हैं और वे सब यह मानकर ही अहमदी होते हैं कि ख़ातम के वही अर्थ उचित हैं जो हम करते हैं। नबी को मानने वाला आहिस्ता-आहिस्ता ही जमाअत में आते हैं और इस तरह जमाअत की संख्या बढ़ती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में कादियान कैसा गांव था जहां कोई सवारी नहीं जाती थी केवल टांगे में बैठकर जाते थे सड़के टूटी फूटी थी ऐसी अवस्था में जमाअत फैली और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि आप के समय में चार लाख मानने वाले हो गए थे इस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सालम के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पधारे लेकिन यहूदियों ने उनको स्वीकार ना किया इसी तरह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पधारे परन्तु साधारण मुसलमानों ने ख़ात्म के अर्थ करने के नबुव्वत का रास्ता बन्द कर लिया और आप को न माना।

ख़ुदा तआला ने कुरान करीम की हिफाजत का वादा फरमाया है और इसमें किसी का परिवर्तन नहीं होने दिया इसीलिए हम वही अर्थ करते हैं जो कुरआन ने किए हैं

ख़ातम की जो परिभाषा हम करते हैं वही उचित है ईसाइयत को फैलने में तीन सदियां लगी और अंत में एक रोमन बादशाह के स्वीकार करने पर इसको तरक्की मिली जमअत अहमदिया के बारे में हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ने लिखा है कि 3 शताब्दी भी पूरी नहीं होंगी कि अहमदियत विजय पा जाएगी। हम धीरे-धीरे फैल रहे हैं मौलवियों को ठीक करने के लिए भी तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पधारे हैं ताकि उनकी गलत धारणाओं का रद्द हो सके तभी तो आपका नाम हकम तथा इंसाफ करने वाला रखा गया है ताकि आप इन बिगड़े हुए मौलवियों को ठीक कर सकें।

एक बच्चे ने Human Evolution उनके बारे में सवाल किया कि यह किस तरह होता है।?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया Evolution तो होता है धीरे-धीरे तरक्की होती है। पहले इंसान गुफाओं इत्यादि में रहते थे फिर बाहर निकले पहले सिर्फ गोश्त खाते थे फिर सब्जियां उगानी शुरू कीं और धीरे-धीरे तरक्की करते करते वर्तमान अवस्था तक पहुंचे हैं। डार्विन की Theory थ्योरी के अनुसार इंसान पहले बंदर था फिर उन्नति कर के वर्तमान अवस्था को पहुंचा है दिखाइए तो सही कौन सा बंदर था। जिस से इंसान बना। साईंसदान नहीं मानते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि अगर इंसान बंदर से बना था तो बंदर आज भी होना चाहिए और दिखाया जाना चाहिए आज आप लोग जो आईपैड या आई फोन लिए फिरते हैं जिनमें हर प्रकार की जानकारी होती है तो यह भी तो Evolution ही है जिस में हर प्रकार का ज्ञान हर समय देख सकते हो

एक बच्चे ने प्रश्न किया अगर कत्ल करना हराम है तो कत्ल की सज़ा क्यों दी जाती है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया फिर जंग करना क्यों उचित है? जंगम में भी तो कत्ल होते हैं फिर इस को क्यों जायज़ करार दिया गया। फरमाया कि सूरत हज्ज में जंग की आज्ञा दी गई है अगर फसाद करने वालों को न रोका गया तो कोई इबादत करने का स्थान सुरक्षित नहीं रहेगा। एक जुर्म के लिए मौत की सज़ा होती है तो साथ यह कह दिया गया कि अगर संबंधियों को उसे माफ करना चाहें तो माफ कर सकते हैं परंतु सिर्फ वही करेंगे जो कत्ल होने वाले के वारिस हैं। कुछ देकर माफ करवा लेते हैं और कुछ पैसे दे कर माफ करवा लेते हैं सज़ा तो इसलिए दी गई थी कि जुर्मों को रोका जा सके।

एक बार एक आदमी को किसी ने कत्ल कर दिया मुकदमा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अदालत में पेश हुआ आपने कत्ल होने वालों के रिश्तेदारों को बुलाकर पूछा कि क्या तुम इसे माफ करते हो उन्होंने कहा कि नहीं इसे कत्ल किया जाए फिर जब उसे क़त्ल के स्थान ले जाने लगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर पूछा उन्होंने कहा कि नहीं यह हमारे रिश्तेदार का कातिल है इसे कत्ल की सजा दी जाए फिर तीसरी बार पूछा इंकार करने पर इसे सज़ा मिल गई। इस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर यह माफ कर देते तो इसके अपने गुनाह भी इस के सिर होते। इस्लाम में माफ करने का भी आदेश है और सज़ा का भी आदेश है।

वाक्फीन नौ की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह कक्षा 8:45 पर समाप्त हुई।

दिनांक 13 मई 2016 ई

वाक्फाते नौ की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ क्लास

इसके बाद वाक्फाते नौ की क्लास हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ शुरू हुई। प्रोग्राम का आरंभ क़ुरआने करीम की तिलावत से हुआ जो प्रिया मुफलह रशीद साहिबा ने की। और नाबग़ा चौधरी साहिबा ने इस का उर्दू अनुवाद और फारिया रहमान ने इसका स्वीडिश अनुवाद प्रस्तुत किया इसके बाद अज़ीज़ा अमल याह्या खान साहिबा ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस को अरबी में पढ़ा इस का अनुवाद दुर्रे शहवार ख़ान साहिबा ने प्रस्तुत किया इसके बाद उर्दू भाषा में अनुवाद आज़ीज़ी आमना सलीम साहिबा ने पेश किया इसका स्वीडन भाषा में अनुवाद पेश किया गया। इसके बाद हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का नीचे लिखा अनुवाद प्रस्तुत किया गया।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "अगर दुनियादारों की तरह रहोगे तो इस से कुछ लाभ नहीं कि तुम ने मीरे हाथ पर तौब: की । मेरे हाथ पर तोब: करना एक मौत को चाहता है ताकि तुम नए जीवन में एक और पैदायश को प्राप्त करो। बैअत अगर दल नहीं तो कोई परिणाम इस का नहीं। मेरी बैअत से ख़ुदा दिल का इकरार चाहता है। अत: जो सच्चे दिल से मुझे स्वीकार करता है और अपने गुनाहों से सच्चा पश्चाताप करता है। गफूर और रहीम ख़ुदा इस के गुनाहों को ज़रूर बख़श देता है और वह एसा हो जाता है जैसे माँ के पेट से निकला है। तब फरिशते इस की सुरक्षा करते हैं। "

(मल्फूज़ात जल्द द्वितीय पृष्ठ 194)

इस के बाद अज़ीज़ा आफिया ईमान ने इस अंश का स्वीडश भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद प्रिया मर्यम फातिहा साहिबा ने नीचे लिखी नज़्म अच्छी आवाज़ में पेश की।

ख़िलाफत है इनाम आसमानी
ख़िलाफत है निज़ाम मुअतबर
ख़िलाफत से मुकद्दर दीं का ग़लबा
इसी के साथ है फत्ह व ज़फर

इस के बाद प्रिया मारिया चौधरी और अज़ीज़ा गज़ाला चौधरी ने जमाअत अहमदिया स्वीडन की तारीख और ख़ुलफाए अहमदियत के दौरे के हवाले से वर्णन किया।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी को 1930 ई में एक रोया में दिखाया गया कि नॉर्वे, स्वीडन और फिन लैंड और हंगरी के लोगों अहमदियत का इन्तज़ार कर रहे हैं। इन आसमानी पेशगोइयों का पूरा होना था। जब हज़रत मुस्लेह मौऊद 1955 ई में यूरोप के दौरे पर लन्दन पधारे तो हज़ूर को स्वीडन का एक छात्र "गनारईरकसोन" मिला। उस ने हुज़ूर से आवेदन कि स्वीडन में अहमदिया मिशन हाउस खोला जाए। अत: सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी का हिदायत पर आदरणीय सय्यद कमाल यूसुफ साहिब को सैकण्ड नेविया का पहला मुबल्लिग़ बना कर भेजा गया। और गौथन बर्ग को केन्द्र बनाया गया।

1973 ई जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस पहली बार स्वीडन पधारे। तो हुज़ूर ने आदरणीय सय्यद कमाल यूसुफ साहिब को आदेश फरमाया कि गौथन बर्ग में मस्जिद के लिए ज़मीन हासिल करने के लिए कोशिश करें। 26 सितम्बर 1975 ई के दिन वह इतिहासिक दिन था जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने गौथन बर्ग में Tolvskillingsgatan की एक पहाड़ी के सिरे पर मस्जिद नासिर की बुनियाद रखी पहली ईंट मस्जिद मुबारक कादियान से लाई गई थी।

इस अवसर पर हुज़ूर ने फरमाया कि इस मस्जिद के दरवाज़े सभी लोगों के लिए खुले रहेंगे जो ख़ुदा तआला को वाहिद मानते हैं वो इसमें ख़ुदा तआला की इबादत कर सकते हैं । चाहे उस का सम्बध किसी भी धर्म से हो।

ख़िलाफत राबिया के दौर में जमाअत अहमदिया स्वीडन को यह सआदत नसीब हुई कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि रहमहुल्लाह तआला 6,7 बार स्वीडन तशरीफ़ लाए। 8 अगस्त 1982 ई को पहली बार जब हुज़ूर पधारे तो हुज़ूर ने पहली बार मजलिसे शूरा के ओयोजन के माध्यम से एक नए युग की नींव रखी। इस के बाद 1986 ई में पधारे और फिर 1987 में दक्षिण स्वीडन के नगर माल्मो जो कि आबादी की दृष्टि से सवीडन का तीसरा बड़ा नगर है इस में एक नए मिशन हाउस

बैयतुल हमद का उद्घाटन फरमाया। उसके बाद हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि ने 1989 ई गौथन बर्ग, माल्मो और कालमार का दौरा फरमाया। इस के बाद हुज़ूर 1991 ई में भी आए। 1993 ई में हुज़ूर सवीडन तशरीफ़ लाए और आख़री दौर 1997 ई का था।

ख़िलाफत ख़ामसा के बरकतों वाले दौर आरम्भ हुआ तो सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने 11 सितम्बर 2005 ई को पहली बार स्वीडन तशरीफ़ लाए। इस मुबारक यात्रा के दौरान स्वीडन में पहली बार सेकंड नीवेन जलसा भी आयोजित हुआ जिस में स्वीडन, नॉर्वे, डेनमार्क फिन लैंड के सदस्यों ने शिरकत की।

ख़ुत्बा जुम्अ: के अलावा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने जलसे के दोनों दिनों में ईमान वर्धक ख़िताब फरमाए। पारिवारिक मुलाकातें , आमीन समारोह वक्फे नौ क्लास आयोजित हुई। हुज़ूर माल्मो में इस जगह भी पधारे जहाँ आज मस्जिद तामीर होई है और मस्जिद की तामीर के बारे में निर्देश दिए। यहाँ आज अल्लाह तआला के फज़ल से मस्जिद महमूद मुकम्मल हो चुकी है। मस्जिद की नींव 12 अप्रैल 2014 ई को रखी गई थी। हमारे प्यारे हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अल्लाह तआला के फज़ल से आज 11 वर्ष इंतजार के बाद फिर से हम में मौजूद हैं और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल लज़ीज़ ने आज मस्जिद महमूद का उद्घाटन किया है और आसमानी पेशगोइयों के अनुसार कि इस्लाम का सूरज पश्चिम से उदय होगा के आसार अब चमकदार से रोशन होता जा रहा है।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की अनुमति से सवाल तथा जवाब का सिलसिला शुरू हुआ।

एक बच्ची ने प्रश्न किया के छोटे बच्चों के सिर के बाल क्यों मुंडवाते हैं?

हुजूर ने फरमाया यह सुन्नत है बच्चा जब पैदा होता है तो उसका का अकीका करवाते हैं लड़की के लिए एक बकरा और लड़के के लिए दो बकरे अकीका करवाते हैं यह सदका नहीं होता आप खुद भी खा सकते हैं बाल कटवाते हैं और बालों के वजन के बराबर चांदी सदका में देते हैं बच्चे की आयु सेहत और जिंदगी के बरकत वाला होने के लिए अक़ीक़ा किया जाता है आं हज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम ने हमें करके दिखाया किस तरह करना चाहिए इसलिए करते हैं

एक बच्चे के सवाल पर कि क्या यह सच बात है कि अल्लाह तआला ने हम सबकी शुरू से जोड़ियां बनाई होती हैं?

हुजूर ने फरमाया शुरू से जोड़ी बनी होती है या नहीं इसका तो पता नहीं कुछ की जोड़ियां बनी होती है और अलग भी हो जाते हैं हां यह कहते हैं कि जब किसी का रिश्ता हो जाता है बड़ी बुढ़ियां कहती हैं अल्लाह ने यह जोड़ी बनाई हुई थी है वास्तविक बात यह है कि अल्लाह तआला के ज्ञान में तो होता है कि अमुक नेअमुक की जोड़ी बनना है अमुक से अमुक का रिशता होना है कई बार अलग भी हो जाते हैं।

यह तो अल्लाह तआला को पता है कौन सी जोड़ी उचित है हज़रत ज़ैद की शादी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक फूफेरी बहन से हुई थी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने करवाई थी परन्तु जब रिश्ता स्थापित न हुआ तो तलाक हो गया। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शादी हुई। उ नकी नेकी का अल्लाह तआला को पता था उन की नेकियों के कारण से अल्लाह तआला ने उन के मोमिनों का माता बनाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया दुआ ज़रूर करनी चाहिए कि अल्लाह तआला भविष्य का जानने वाला है उसको पता है कि किसके साथ किस का सहीह रंग में गुज़ारा होना है इसलिए दुआ करके कोशिश करनी चाहिए यह जरूरी नहीं कि तुम इस्तिग़फार करो तो दुआ में जवाब दिया जाए इस्तिग़फार का अर्थ है अल्लाह तआला से भलाई मांगना कि अल्लाह तआला के निकट अगर बेहतर है तो ऐसा हो जाए कई बार दुआओं में कमी रह जाती है जिसके कारण से बाद में समस्याएं भी पैदा हो जाती है इसलिए अल्लाह तआला के ज्ञान में तो यह है कि किस ने किस की जोड़ी बनना है लेकिन इंसान की ग़लतियों के कारण से उनमें कई बार मुश्किलें भी पैदा हो जाती हैं

एक बच्चे ने सवाल किया कि मैं वक्फ नहीं हूं लेकिन मेरा दिल चाहता है मैं अफ्रीका जाकर सेवा कर सकती हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया वक्फ तो नहीं हो मैं क्या कर सकता हूं। अपने अब्बा अम्मी को कहो कि उन्होंने क्यों नहीं किया अगर वक्फ करना है तो कुछ बनकर दिखाओ टीचर बन सकती हो जन्म से पहले माता पिता का वक्फ करना होता है बड़े होकर पढ़ लिखकर कुछ बन कर वक्फ कर सकती हो।

एक बच्ची ने प्रश्न किया कि शिया लोग जो रोते हैं क्या उनको सुन सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया वैसे कोई शीया पढ़ या है या TV पर आ रहा है तो सुनने में तो कोई गुनाह नहीं है परंतु उनकी तरह हरकतें करना मना है रोना-पीटना मना है ज्यादा भी ना सुना करो इसके अतिरिक्त और भी अच्छी-अच्छी नज्में हैं कसीदे हैं नअते भी हैं वह सुना करो ज्यादा ही रोने धोने के शेरों के सुनने का शौक है तो उनको सुन सकती हो इस पर इस बच्ची ने फिर कहा कि मुझे सारे मना करते हैं कि ना सुना करो अगर तुम रोना धोना सुनोगी तो वह आपको मेरी शिकायत कर देंगे। इसलिए सोचा कि मैं ख़ुद ही पूछ लूं हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि शिकायत करेंगे तो मैं आप ही देख लूंगा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर शीयों की तरह पाटती नहीं तो सुनने में कोई हर्ज नहीं उनके बड़े बड़े अच्छे शेयर हैं "भैया को ना पाएगी तो घबराएगी ज़ैनब" यह भी है इस तरह कुछ और अच्छे अच्छे शेर हैं सुनने में कोई हर्ज नहीं।

इस बच्ची ने सवाल किया कि जब आप चुने गए थे तो सबसे पहले क्या दुआ मांगी थी?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अल्लाह तआला से दुआ मांगी थी कि मुझे तो कुछ पता नहीं जो मेरे काम है ख़ुद ही करता चला जा

एक बच्ची ने सवाल किया कि जब दुनिया में अहमदियत की विजय हो जाएगी तो क्या सारी दुनिया में शांति हो जाएगी?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया विजय का अर्थ यह है कि बहुत बड़ी संख्या में अहमदी हो जाना। परंतु इसाईयत भी स्थापित रहेगी यहूदियत भी स्थापित रहेगी। सूरह फातिहा की दुआ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ। हम करते हैं बिगड़े हुए मुसलमान भी हो सकता है स्थापित रहेंगे और दूसरे धर्म वाले भी होंगे परंतु अधिकतर संख्या अहमदियों की होगी और उस समय हालात में साधारणत: अमन हो जाएगा लेकिन जब पता कयामत आनी है तो फिर दुनिया बिगड़ जाएगी फिर वही पहली वाली बात है कयामत फिर ऐसे लोगों पर आएगी जब बिगड़े होंगे अमन होगा इंशा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया पहले अपने अंदर तो अमन स्थापित करो।

एक बच्ची ने प्रश्न किया कि नौजवान बच्चे यहां तक के स्वीडिश बच्चे भी अग्रपंथ की तरफ जा रहे हैं हम अहमदी उन को किस तरह रोक सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया उनको बताओ जब किसी के अधिकार अदा नहीं करेंगे तो Frustration पैदा होगी लोगों को उनके अधिकार अदा करने चाहिए। 2008 ई की आर्थिक कठिनाइयों से पहले यह परेशानियां नहीं थीं। इन संकटों के बाद यह रुझान पैदा हुआ है जब लोगों की आर्थिक जरूरतें पूरी ना होंगी तो ऐसी अवस्था पैदा होती है परेशानियां पैदा होती हैं जिस से फिर उग्रपंथियों ने लाभ उठाया और अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए कोशिशें तेज़ कर दीं उन लोगों में कुछ मुसलमान हैं और इन उग्रपंथी ग्रुप या आई एस आई के साथ मिले। उनका हल यही है उनको समझाया जाए यही मैं कहता रहता हूं तुम लोग अपने लिट्रेचर लेकर उनको बताओ कि शांति के साथ रहने में ही लाभ है जो लोग मुसलमान होकर इन ग्रुप्स में शामिल होते हैं उनको इस्लाम का पता ही नहीं उन लोगों को गाइड करने वाला कोई नहीं। फरमाया कि अहमदियों में से कोई नहीं होता शायद कोई हुआ हो तो अहमदी से हटकर ही होगा जबकि हमारे नौजवानों को सीधे रास्ते की तरफ मार्गदर्शन मिलता रहता है। इस्लाम की शिक्षा को अपने स्वार्थ के लिए बिगाड़ कर रख दिया है।

उन लोगों को भी उचित इस्लामी शिक्षा के बारे में बताना होगा। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मैं यह काम ही कर रहा हूं मेरे संबोधन जो मैंने विभिन्न पार्लियमेन्ट में दिए हैं क्या उनको पढ़ती हो उनको आगे लोगों में बांटा भी करो।

एक नासिरा ने कहा कि उसका दिल चाहता है कि वह डाक्टर बनें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि तुम्हें किस ने रोका है पढ़ाई करो मुझे कोई आपत्ति नहीं।

एक बच्ची ने कहा कि वह यहां टीचिंग कर रही है एक कॉलेज में पढ़ाती है क्या

इसे अफ्रीका भेजा जा सकता है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया क्या तुम शादीशुदा हो? उस ने कहा नहीं परन्तु मुझे अफ्रीका में सेवा करने का बहुत शौक है हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया लिख कर दे दो अगर किसी वक्फ ज़िन्दगी के साथ शादी हो जाए तो ज्यादा उचित है क्या तुम्हारी शादी की उम्र हो गई है उस ने कहा जी हुज़ूर। हुज़ूर अनवर ने फरमाया फिर चली जाओ।

एक नासरात ने सवाल किया कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खलीफाओं के नाम के साथ रज़ि अल्लाहो अन्हो आता है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहस्सिलाम पहले दो खलीफाओं के नामों के साथ भी रज़ि अल्लाहो अन्हो आता है जबकि तीसरे और चौथे खलीफाओं के नाम के साथ रहमहुल्लाह आता है इस का इसका क्या कारण है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जो सहाबी होते हैं नबी को उसके जीवन में मानने वाले उसको देखने वाले उसके हाथ पर बैअत करने वाले उन की वफात पर उनके नाम के साथ रज़ि अल्लाह अनहो आता है जब के बाद में आने वालों के साथ रहमहुल्लाह तआला अर्थात अल्लाह उन पर अपनी रहमत नाजिल फरमाए आता है वैसे तो रज़ि अल्लाह तआला का अर्थ है अल्लाह उनसे राज़ी हो इसमें कोई अंतर नहीं फर्क सिर्फ केवल जीवन में मानने वाले और बाद में मानने वालों का है यह एक तरीका है वैसे तो सऊदी शहजादे जब मरते हैं तो उनके नामों के साथ भी रज़ि अल्लाह लगा देते हैं

हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दो ख़लीफा सहाबी नहीं थे उन्होंने हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को नहीं देखा इसलिए उनके साथ रहमहुल्लाह लगाया जाता है यह एक तरीका चला आ रहा है परंतु अगर कह दिया जाए तो कोई आपत्ति नहीं। कुरआन ने भी सहाबा के लिए रज़ि अल्लाह के शब्द प्रयोग किए हैं। इन के साथ रिज़ अल्लाह के शब्द लिखे जाते हैं। नबी को उन्होंने देखा उस के साथ रहे।

एक बच्ची ने सवाल किया जब आप को पाकिस्तान जाने की आज्ञा मिलेगी तो क्या आप रब्वा को मरकज़ बनाएंगे या लंदन को?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मुझे तो किसी ने नहीं रोका इजाजत तो अब भी है परंतु मैं अगर वहां जाऊं तो ख़ुत्बा नहीं दे सकूंगा ना अपने आप को मुसलमान कह सकूंगा ऐसी अवस्था में जा कर क्या करुंगा। पाकिस्तान के कानून में ख़लीफा के हाथ को बांधा हुआ है ताकि वह कुछ कर न सके। इस लिए वहां नहीं जाते। हां यह कहो जब पाकिस्तान की अवस्था ठीक हो उस समय समय का ख़लीफा वहां जा सकता हो। आज़ादी के साथ अपने धार्मिक कामों को कस सकता हो तो ज़रूर जाएगा। रब्वा का केन्द्र का सम्मान तो स्थापित है कादियान का सम्मान भी है। हो सकता है कि वहां जाएं परन्तु ज़माना इस प्रकार चल रहा है कि जो सुविधा यूरोप में है वे कादियान में या रब्वा में पैदा हो जाएं तो ज़रूर वहां जाएगा। प्राय एक बार हिजरत हो जाए तो फिर हिजरत रहती है। उस समय जो भी ख़लीफा होगा वह देखेगा वे कुछ महीनों के लिए वहां रहेगा । जब अवसर आएगा तो देखा जाएगा।

एक बच्चे ने सवाल किया कि अल्लाह तआला ने हर चीज को इंसान के लाभ के लिए पैदा किया है तो सूअर को पैदा करने में क्या लाभ है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया वह भी किसी लाभ के लिए पैदा किया गया है हमें उसका पता नहीं। अल्लाह तआला को तो पता है उसकी बहुत सारी चीजें मेडिकल रिसर्च में काम आ सकती है आजकल रिसर्च में सूअर के अंग भी प्रयोग हो रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया तुमने सांप के बारे में नहीं पूछा? सूअर खाना उसकी हरकतों की वजह से आदतों की वजह से हराम है। हर जानवर के गुण हैं उसके दिल पर रिसर्च हो रही है हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया के इंटरनेट से यह ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। वाक्फाते नौ बच्चियों की क्लास 9:30 तक जारी रही।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नमाज मगरिब अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने अपने निवास पर पधारे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़िल्ली नबुव्वत का दावा और इसकी वास्तविकता

प्रिय पाठको सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विभिन्न दावों और आप के सम्मान के बारे में आप पिछले पृष्ठों में पढ़ चुके हैं यहां हम आपके एक और दावा, ज़िल्ली नबुव्वत को पेश कर रहे हैं। सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को आप के रसूल से मुहब्बत के कारण अल्लाह तआला ने नबुव्वत का स्थान प्रदान किया चूंकि ख़िलाफत की प्रणाली का आरम्भ इस नबुव्वत के स्थान के आरम्भ होता है इसलिए नबूवत के दावे को स्पष्ट करना आवश्यक है। आप के इस नबुव्वत के दावा की वास्तविकता को ना समझने की वजह से मुसलमानों का एक बड़ा भाग आप को नऊज़ बिल्लाह नबुव्वत का इनकार करने वाला कहता है इस तरह आपके मानने वालों में से एक तबका अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए आपके दावा से हट गया इसलिए आपके इस दावा का महत्त्व अन्य दावों से बहुत बड़ा है और आप का सबसे उच्च स्थान है जो आपको अल्लाह तआला की तरफ से प्रदान किया गया है।

प्रिय पाठको जैसा कि हम जानते हैं कि आज से 14 सौ वर्ष ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम ने उम्मते मुहम्मदिया के लिए एक महान इमाम, हकम तथा अदल करने वाला महदी मौऊद के आने की खुशखबरी दी थी और हुज़ूर ने इस मौऊद के लिए चार बार स्पष्ट रूप से "नबी उल्लाह" के शब्द प्रयोग किए थे।

(सही मुस्लिम)

और हुज़ूर ने उम्मत के इस अकेले और वाहिद वजूद का ज़िक्र करते हुए फरमाया था لَيْسَ بِيْنِيْ وَبَيْنَهٗ نَبِيٌّ (अबू दाऊद) अर्थात मेरे और उसके मध्य कोई नबी नहीं होगा अर्थात एक मैं ही नबी हूं और एक वह नबी होगा केवल यही नहीं बल्कि हुजूर ने उम्मते मुहम्मदिया के इस मौऊद की नबुव्वत को ही भी सम्मान का कारण बयान करने के लिए फरमाया था

اَبُوْبَكْرٍ اَفْضَلُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اِلَّا اَنْ يَكُوْنَ نَبِيٌّ

(कनूज़ुल हकायक ले उस्ताज़ सय्यद अब्दुर्रऊफ अल्मुनादी)

अर्थात अबू बकर इस उम्मत के सब से सबसे उत्तम व्यक्ति हैं सिवाए इस के कि कोई नबी पैदा हो जाए ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इन ख़ुश ख़बरियों के अनुसार फिर वह मुबारक घड़ी आई जब वह पवित्र वुजूद कादियान की पवित्र बस्ती में प्रकट हुआ। अल्लाह तआला ने अपने पवित्र संबोधन में नबी और रसूल के स्थान पर खड़ा किया। "ब्राहीने अहमदिया" जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की एक प्रसिद्ध किताब 1880 ई से 1884 ई तक प्रकाशित हुई उस में यह इल्हाम वर्णन हैं।

प्रिय पाठको ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह तआला से वार्तालाप का सम्मान पाया और खुदा के कलाम में जब बार-बार हुज़ूर को नबी, रसूल और मुरसल कहकर पुकारा गया तो आप मुसलमानों के साधारण आस्था और 1000 वर्ष से रिवाज पा चुकी नबूवत की परिभाषा के आधार पर हुजूर ने अल्फाज को स्पष्ट अर्थों पर आधारित करने के स्थान पर उसकी ताबीर की ओर ध्यान दिया।

नबूवत की ऊपर वर्णन की गई आस्था के अनुसार जो मुसलमानों में प्रचलित थी इस से बचने के लिए नबी और रसूल का इस्तेमाल अपने लिए बहुत कम करते थे और जब अल्लाह तआला की वह्य में अपने आप को नबी कहा जाता तो आप इस पुरानी आस्था के कारण जो उस समय मुसलमानों में प्रचलित थी कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आ सकता अपने आप को नबी कहने के स्थान पर इन शब्दों के यह अभिप्राय लेते थे कि नबी से अभिप्राय केवल आंशिक नबुव्वत पर आधारित नबी अर्थात मुहद्दस है परन्तु चूंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के निकट नबी थे और ख़ुदा तआला बार बार और निरन्तर बारिश की तरह अपनी वह्यी में हुज़ूर को नबी और रसूल के शब्दों से सम्बोधन फरमाता था। इसलिए इस वह्य ने आप को पहले विचारों पर स्थापित न रहने दिया। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ख़ुद फरमाते हैं

"आरंभ में मेरी यही आस्था थी कि मुझ को मसीह पुत्र मरियम से क्या तुलना है वह नबी है और खुदा के सम्माननीय लोगों में से हैं और अगर कोई बात मेरी

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 20 September 2018 Issue No. 38

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

प्रतिष्ठा के बारे में प्रकट होती है तो मैं उसको एक आंशिक सम्मान करार देता था परंतु बाद में ख़ुदा तआला की वह्यी बारिश की तरह मेरे पर उतरी। इस ने मुझे इस अकीदा पर कायम न रहने दिया और सरीह तौर पर नबी का ख़िताब मुझे दिया गया। मगर इस तरह से कि एक पहलु से नबी और एक पहलु से उम्मती।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द न 22 हकीकतुल वह्यी सफा 153-154 प्रकाशन लन्दन ऐडिश्न 1984 ई)

इसके बाद आपने हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम से हर शान में बेहतर होने का ऐलान फरमा दिया। अत: जब यह बात ख़ुदा तआला की तरफ से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ज़ाहिर हो गया कि लोगों में प्रचलित नबुव्वत की परिभाषा जामेअ तथा मानेअ नहीं है और यह कि नबी के लिए शरीयत का लाना ज़रूरी नहीं और न ही ज़रूरी है कि वह पिछली शरीयत के कुछ आदेशों को रद्द करे और पहले नबी का उम्मती न हो हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने नबुव्वत और रिसालत की हकीकत इन शब्दों में ब्यान फरमाई :

"सिर्फ मुराद मेरी नबुव्वत से कसरत मुकालमा व मुख़ातबा इलाहिया है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इतबाअ (अनुकरण) से हासिल होती है। अत: मुकालमा तथा मुख़ातबा के आप लोग ही कायल (मानने वाले) हैं मैं इसकी कसरत (प्रचुरता) का नाम अल्लाह तआला के आदेश से नबुव्वत रखता हूँ।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द न 22 सफा 503 परिशिष्ट हकीकतुल वह्यी सफा 68 मबतुआ 1984 ई लन्दन)

"मेरेनिकट नबी इसको समझते हैं जिस पर अल्लाह का कलाम यकीनी तौर पर ज़्यादा से ज़्यादा उतरा हो , जो ग़ैब पर मुश्तमिल हो । इसलिए ख़ुदा ने मेरा नाम नबी रखा।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द न 20 सफा 412 तजल्लीयात इलाहिया सफा 20 मबतुआ 1984 ई लन्दन)

"अगर ख़ुदा तआला से ग़ैब की ख़बरें पाने वाला नबी का नाम नहीं रखता तो फिर किस नाम से इसको बुलाया जाए ? अगर कहो उसका नाम मुहद्दिस रखना चाहिए तो मैं कहता हूँ तहदीस का अर्थ किसी लुग़त की पुस्तक में इज़हारे ग़ैब नहीं है। मगर नबुव्वत के अर्थ इज़हार अमर ग़ैब है।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 18 सफा 209 एक ग़लती का इज़ाला प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

प्यारे पाठको! नबुव्वत की परिभाषा जो उस समय प्रचलित थी इस में इंकलाबी तबदीली के बाद अर्थात लगभग 1901 ई से लेकर वफात तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट रूप में और पूरी तसरीह के साथ अपनी ज़ात पर नबी रसूल और मुरसिल के शब्दों का इतलाक फरमाया लेकिन हमेशा हज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह ऐहतियात रखी कि कहीं लोग किसी ग़लती का शिकार न हो जाऐं। इस लिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम जब भी अपने लिए नबी या रसूल का शब्द प्रयोग करते तो यह खोल कर ब्यान कर देते कि नबुव्वत से मेरा मक़सद वह मअरूफ नबुव्वत नहीं है जिसके लिए शरीयत जदीद लाना ज़रूरी है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम हमेशा इस बात को खोल कर ब्यान करते हैं कि मैं रसूल करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उम्मती हूँ और मुझे जो कुछ मिला है हुज़ूर अलैहिस्सलाम के फैज़ से मिला है और मेरी नबुव्वत हुज़ूर अलैहिस्सलाम के मरतबा नबुव्वत के कतई मनाफी नहीं है। चूंकि आप फरमाते हैं:

"मैं नई शरीयत और नए नाम के तौर से रसूल और नबी नहीं हूँ और मैं रसूल और नबी हूँ अर्थात सम्पूर्ण ज़िल्ली रूप के जो आइना के सदृश्य है जिस में मुहम्मदी शक्ल और मुहम्मदी नबुव्वत का कामिल इनअकास है।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द सफा 381 नुज़ूल मसीह सफा 5 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

और फरमाते हैं

"जिस जगह मैनें नबुव्वत या रिसालत से इंकार किया है कि मैं स्थायी रूप से कोई शरीयत लाने वाला नहीं हूँ और न ही मुस्तकिल तौर पर नबी हूँ मगर इन शब्दों से कि मैंने अपने अनुकरण किए जाने वाले रसूल से बातनी फैज़ हासिल करके और अपने लिए इसका नाम पाकर इसके वास्ता से ख़ुदा की तरफ से इल्म ग़ैब पाया है, रसूल और नबी हूँ मगर बग़ैर किसी जदीद शरीयत के। इस तरीके का नबी कहलाने से मैंने इंकार नहीं किया इन्हीं अर्थों से ख़ुदा ने मुझे नबी और रसूल करके पुकारा है अत: अब भी मैं इन अर्थों से नबी और रसूल होने से इंकार नहीं करता।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द न० 18 सफा 211 - 212) (एक ग़लती का अज़ाला सफा 6 -7 मबतुआ 1984 इ० लन्दन)

और मार्च 1908 ई० में मज़ीद वज़ाहत करते हुए फरमाते हैं:

"हमारा दावा है कि हम रसूल और नबी हैं। दरअसल यह निज़ाअ लफज़ी है ख़ुदा तआला जिसके साथ ऐसी बातचीत करे जो ब-लिहाज़ कमीयत दूसरों से बहुत बढ़कर हो और इसमें पेशगोईयाँ भी कसरत से हों इसे नबी कहते हैं। यह परिभाषा हम पर सादिक आती है। हम नबी हैं हां नबुव्वत तशरीई नहीं जो किताबुल्लाह को मनसूख़ करे।

(बदर 5 फरवरी 1908 ई)

प्यारे पाठको ! नबूव्वत के दावा का सारांक्ष यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फैज़ से मुनव्वर होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की आज्ञा से ज़िल्ली नबी का दावा फरमाया और आप अलैहिस्सलाम की ज़िल्ली नबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी और आप अलैहिस्सलाम के जमाल के इज़हार के लिए है। आरंम्भिक ज़िन्दगी से ही आप अलैहिस्सलाम ने रिवाज पा चके आस्था के अनुसार ख़ुदा के शब्द नबी से सम्बोधन करने का बावजूद इसके अर्थ मुहद्दस किए हैं। परन्तु जब आप पर बहुत अधिक बारिश की तरह यह बात स्पष्ट कर दी गई कि आप ज़िल्ली नबी हैं तो आप ने सब का सामने इस बात को खोल कर वर्णन किया कि मैं ख़ुदा तआला की तरफ सा नबी के रूप में हूं।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad